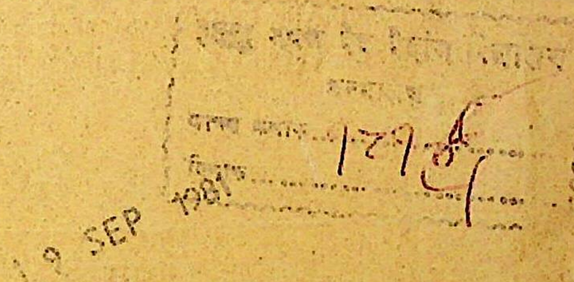
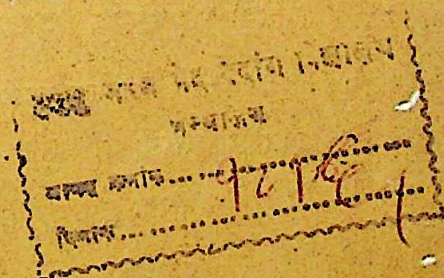
रंगभारती

H.D.88





10

अप्रैल, 1981

रंगकर्मियों से निवेदन

- कोई भी संघर्षशील पत्रिका केवल राज्याश्रय अथवा बड़े औद्योगिक घरानों के सहारे कभी नहीं चली।
- कोई भी सोद्देश्य पत्रिका राज्याश्रय के अभाव में लड़खड़ा सकती है, लेकिन मर नहीं सकती।
- 'रंगभारती' आपकी अपनी पत्रिका है। इसे आपका संरक्षण चाहिये।

हमारा सभी रंगकर्मियों से निवेदन है कि मात्र बारह रुपये आज ही भेजकर जुलाई, १९८० के अंक से 'रंगभारती' के वार्षिक ग्राहक बन जायें।

- समस्त पुराने सहयोगियों से निवेदन है कि वे अपनी वार्षिक सहयोग-राशि बारह रुपये मात्र तुरन्त भेजकर 'रंगभारती' को पूर्ववत् अपना संरक्षण प्रदान करें।
- रंगभारती' के विभिन्न स्तंभों तथा विशेषांकों के लिये हम आपकी रचनायें भी सादर आमंत्रित करते हैं।
- वार्षिक सहयोग-राशि केवल वितरण-व्यवस्थापक 'रंगभारती', नक्षत्र अंतर्राष्ट्रीय, ...रा भेजें।

विनीत
डॉ० अज्ञात
संपादक

...तम नाटक

...26003

10
981
का

गंगाभारती

संपादक : डॉ० अज्ञात

प्रधान कार्यालय :

रंगभारती, कोठी साह जी, मिर्जामण्डी, चौक, लखनऊ-226003

कानपुर कार्यालय :

छायालोक, 111-ए/183, अशोक नगर, कानपुर-208012

यह अंक : रु० 1-50 वार्षिक : 12-00 रुपये

राजस्थान शासन द्वारा सार्वजनिक पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के लिये मान्यता प्राप्त पत्रिका

रंगभारती

इस अंक में

रंगभारती

द्वारा आयोजित

कौमी एकता नाट्य-प्रतियोगिता

की नियमावली

- 'रंगभारती' द्वारा आयोजित कौमी एकता नाट्य-प्रतियोगिता में नाट्य-रचना भेजने की अन्तिम तिथि 30 जून, 1981 है।
- सर्वश्रेष्ठ नाट्य-कृति का चयन निर्णायक-मण्डल द्वारा किया जायेगा। मण्डल का निर्णय अन्तिम और मान्य होगा।
- मण्डल द्वारा चुनी हुई सर्वश्रेष्ठ रचना पर 501.00 रु० का नकद पुरस्कार एक विशेष समारोह में नाटककार को प्रदान किया जायेगा।
- पुरस्कृत नाट्य-रचना की घोषणा 'रंगभारती' के जुलाई, 1981 अंक में की जायगी।
- पुरस्कृत रचना को 'रंगभारती' के अक्तूबर, 1981 अंक में बिना किसी अतिरिक्त मान-देय के प्रकाशित किया जायेगा।
- पुरस्कृत रचना को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने का अधिकार 'रंगभारती' द्वारा सुरक्षित रहेगा तथा पुस्तक रूप में प्रकाशित होने पर विक्रित पुस्तकों पर लेखक को 10% रायल्टी एवं 10 प्रतियाँ (नि:शुल्क) प्रदान की जायेंगी।
- नाट्यालेख की मंचन-अवधि कम-से-कम सवा घंटा होनी चाहिए।
- आलेख प्रत्येक दशा में अप्रकाशित होनी चाहिए।
- आलेख कागज के एक ओर सुस्पष्ट हस्तलिखित अथवा टंकित होना चाहिए।
- आलेख की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें। पुरस्कृत न होने की दशा में आलेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापस किया जा सकेगा।
- आलेख रजिस्टर्ड डाक से ही भेजें। खो जाने की दशा में 'रंगभारती' का कोई दायित्व न होगा।
- 'रंगभारती' से सम्बद्ध कोई भी व्यक्ति अथवा उसके परिवार का सदस्य इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकेगा।
- अपनी अप्रकाशित नाट्य-रचना आप इस पते पर भेजकर प्रतियोगिता में शामिल हो सकते हैं।

डॉ० शरद नागर

अवैतनिक संयोजक

कौमी एकता नाट्य-प्रतियोगिता

'रंगभारती', कोठी साह जी, मिर्जामण्डी, चौक, लखनऊ-226003

हिन्दी का रंग-आन्दोलन

—डा० सिद्धनाथ कुमार

विशेष लेख : हिन्दी रंगमंच दिवस ३ अप्रैल

रंगमंच मनुष्य की सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति के एक अत्यन्त शक्तिशाली माध्यम के रूप में सदा से स्वीकृत रहा है। बर्नार्ड शा ने रंगमंच के महत्व को स्वीकार करते हुए इसे माना था—विचारों का कारखाना, विवेक का प्रोत्साहक और उत्प्रेरक, सामाजिक आचरण का व्याख्याता, निराशा और उदासी के विरुद्ध चलाया जानेवाला अस्त्र, मनुष्य के ऊर्ध्वारोहण का मन्दिर। इस महत्व के कारण किसी देश और जाति में अपनी रंगमंचीय गतिविधियों की समृद्धि की चिन्ता स्वाभाविक है।

अपने देश में संस्कृत नाटक और रंगमंच की अत्यन्त समृद्ध परम्परा रही। उसके ह्रास के बाद भाषा नाटकों और लोकनाटकों के रंगमंच देश के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रहे। भारतेन्दु के उदय के साथ जब आधुनिक नाटक का नवोन्मेष हुआ, तब कई शताब्दियों के बाद हिन्दी-क्षेत्र में आधुनिक चेतना सम्पन्न एक नये रंगमंच ने जन्म ग्रहण किया। उसके बाद यहां-वहां कभी-कभी कोई हलचल अवश्य सुनायी पड़ी, पर उसे किसी भी स्थिति में रंग-आन्दोलन नहीं कहा जा सकता। रंग-चेतना की जो छोटी-छोटी चिनगारियां विभिन्न स्थानों पर कभी-कभी सुलगती रहीं, उन सबको मिला कर हिन्दी रंग-परम्परा की कोई दहकती हुई ज्वाला नहीं बन पायी। स्वाधीनताप्राप्ति के बाद, विशेष रूप से सन् १९६० के बाद भारतीय नाट्यक्षेत्र में काफी सक्रियता आयी है, अनेक कुशल नाटककार, अभिनेता और निर्देशक सामने आये हैं। इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी नाट्यक्षेत्र में इतनी सक्रियता पहले कभी नहीं आयी थी, पर यह भी सत्य है कि हिन्दी रंगमंच की यह सारी सक्रियता बिखरी-बिखरी है। हिन्दी क्षेत्र के विस्तार को देखते हुए यह सक्रियता अपर्याप्त से भी कम है, और सबसे बड़ी बात यह कि इसमें कोई नियमितता, कोई क्रमबद्धता नहीं है। हिन्दी रंगमंच का कार्य बड़े-बड़े नगरों में ही, वह भी कभी-कभी, दिखायी पड़ता है।

यह प्रसन्नता की बात है कि इधर कुछेक बड़े नगरों की एक-दो संस्थाएं अब नाटकों के नियमित प्रदर्शन की दिशा में सक्रिय हैं।

वर्त्तमान स्थिति को देखते हुए कहना चाहिए कि जिसे रंग-आंदोलन कहा जा सके, वह हिन्दी में अभी भी नहीं है। रंग-आन्दोलन तो तब कहा जाता, जब नाट्य-प्रदर्शन बड़े-बड़े नगरों में ही सीमित नहीं रहता, छोटे-बड़े सब तरह के नगरों में पहुंच जाता, विभिन्न क्षेत्रों और दर्शकों की शिक्षा-दीक्षा एवं रुचियों के अनुरुप अनेक प्रकार के नाटक होते। रंग-आन्दोलन इसे तब कहा जाता, जब रंगमंच लोगों के सांस्कृतिक जीवन का अनिवार्य अंग बन जाता। इंग्लैण्ड और अमेरिका में छोटे-छोटे रंगमंचों का आन्दोलन कभी हुआ था, उस तरह के रंग-आन्दोलन की आज जरुरत है। कुछ लोगों का कहना है कि हिन्दी रंगमंच पहले व्यावसायिकता के धरातल पर तो आये, जैसे दिल्ली में पंजाबी रंगमंच व्यावसायिकता के धरातल पर आया है और आश्चर्यजनक रूप में सफल हुआ है। मात्र व्यावसायिकता रंग-आन्दोलन का उद्देश्य नहीं होना चाहिए, पर इससे रंग-आन्दोलन में गति आ सकती है। किसी भी रंगमंच के जीवित रहने और विकसित होने के लिए सुदृढ़ आर्थिक आधार आवश्यक है—व्यवसाय के माध्यम से यह मिल सके, तो बुरी बात नहीं है, यों प्रत्येक देश में शासन के सहयोग से सांस्कृतिक रंगमंच को जीवित रहने में सुविधा होती रही है। रंग-आन्दोलन की सक्रियता एवं समृद्धि के लिए जितना और जैसा आर्थिक संरक्षण आज आवश्यक है (शासन से प्राप्त संरक्षण में खतरे भी हैं, यह अलग बात है), वह हमारे यहां अभी सुलभ नहीं हो पाया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि नाट्य-संस्थाओं में आत्म-निर्भरता और स्थायित्व आये, नाट्य-प्रदर्शनों में नियमितता आये, और इनके फलस्वरुप रंगप्रेमी दर्शकों का वर्ग निर्मित हो, तभी हिन्दी रंग-आन्दोलन शक्तिशाली बनेगा, सार्थक और सफल होगा। यह सब कैसे होगा, यह एक कठिन विचारणीय प्रश्न है।

रंग चेतना का दिशावाहक आगरा नाट्य समारोह

—अनिल कुमार शाह

आगरा की रंगमंच परम्परा काफी पुरानी है। देश की स्वाधीनता के कुछ वर्ष पूर्व स्थापित भारतीय जन नाट्य संघ की आगरा शाखा प्रायः ३५ वर्ष से रंगमंच के क्षेत्र में सक्रिय रही है। आगरा कालेज छात्र संघ द्वारा भी एक लम्बे अरसे तक उत्कृष्ट नाटकों का मन्चन किया जाता रहा है। किन्तु विगत कुछ वर्ष से आगरा के नाट्यान्दोलन की गति अधिक तीव्र हुई है और इसका श्रेय कुछ वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा आगरा में आयोजित सम्भागीय नाटक प्रतियोगिता के आयोजन और उसके साथ अकादमी के भारतेन्दु नाट्य केन्द्र द्वारा आयोजित नाट्य प्रशिक्षण शिविर को ही दिया जाना चाहिये। अकादमी के इन आयोजनों के बाद पिछले ५ वर्ष में नगर में अनेक नई नाट्य संस्थाएं गठित हुई, जिनमें से 'हम ललित कला मंच,' 'रंगकर्म', 'भारतीय कला संघ' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस समय आगरा में लगभग पन्द्रह नाट्य संस्थाएं कार्यरत हैं। आगरा विकास प्राधिकरण द्वारा नगर में सूरसदन का निर्माण हो जाने से नगर मे प्रेक्षागृह की समस्या भी हल हो गई। किन्तु खेद की बात है कि आगरा की नाट्य चेतना के विकास की ओर उत्तर प्रदेश शासन एवं प्रदेश की संगीत नाटक अकादमी द्वारा अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जा रहा। लगभग ५ वर्ष की उदासीनता के बाद उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी को आगरा की सुधि आई और अकादमी द्वारा विगत २५,२६, व २७ मार्च का तीन दिन के नाट्य समारोह का आयोजन किया गया।

अकादमी का ये नाट्य समारोह आगरा नगर की रंगचेतना को गति प्रदान करने में सहायक हो सकता है बशर्ते कि अकादमी द्वारा अगले ३ वर्षों के लिये आगरा के लिये योजनाबद्ध ढंग से ध्यान देकर काम किया जाये। प्रदेश के प्रमुख शिक्षा, साहित्यिक, औद्योगिक एवं पर्यटन केन्द्र होने के नाते यह उचित होगा कि शासन का सांस्कृतिक कार्य विभाग इस नगर के सांस्कृतिक विकास के प्रति सजग

हो और प्रदेश की संगीत नाटक अकादमी का एक क्षेत्रीय कार्यालय शीघ्रातिशीघ्र आगरा में स्थापित कराये। प्रदेश की संगीत नाटक अकादमी के क्षेत्रीय कार्यालय पर विशेष आग्रह इसलिये है क्योंकि हाल के नाट्य समारोह के सफल आयोजन ने यह सिद्ध कर दिया कि अकादमी के पास सांस्कृतिक आयोजनों का सफल संचालन करने की सूझबूझ है। हाल के नाट्य समारोह की रुपरेखा के निर्माण एवं आगरा की समस्त नाट्य संस्थाओं को सूत्रबद्ध करके प्रायः १००० सीटों के दर्शकों से खचाखच भरे सूरसदन में लगातार तीन दिन तक अपने अथक श्रम और निष्ठा से सुव्यवस्थित रूप से समारोह का सफल संयोजन करके अकादमी के सहायक सचिव डा० शरद नागर ने एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

इस नाट्य समारोह की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि नगर की सभी नाट्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों को लेकर सुविख्यात शिक्षाविद एवं साहित्यकार डा० विद्यानिवास मिश्र की अध्यक्षता में एक नाट्य समारोह समिति का गठन किया गया और इस समिति ने समारोह की व्यवस्था को बड़ी कुशलता से सम्भाला। इससे यह भी आशा बंधती है कि कदाचित भविष्य में आगरा की नाट्य संस्थाओं के बीच पारस्परिक सहयोग और बढ़ेगा। यह आशा तब और बलवती हो सकती है जब अकादमी जैसी साधन सम्पन्न संस्था अपने विशेषज्ञ अधिकारियों द्वारा भविष्य में भी मार्ग-दर्शन एव सहयोग प्रदान करना सुनिश्चित करे।

तीन दिन के इस नाट्य समारोह के अन्तर्गत सूरसदन के मंच पर चार नाटकों का मंचन हुआ।

पहले दिन लखनऊ की प्रमुख नाट्य संस्था 'मेघदूत' द्वारा मणिमधुकर-कृत नाटक 'दुलारीबाई' का मंचन किया गया। दूसरे दिन आगरा की नाट्य संस्थाओं 'हम ललित कला मंच' एवं 'भारतीय जन नाट्य संघ' द्वारा क्रमशः सुशील कुमार सिंह-कृत 'सिंहासन खाली है' तथा 'होहोलिका' का प्रदर्शन किया गया और तीसरे दिन कानपुर की सुप्रसिद्ध संस्था 'शिल्पी' द्वारा सुदर्शन चोपड़ा कृत नाटक 'अपनी पहचान' सूरसदन प्रेक्षागृह के मंच पर खेला गया और इसके पूर्व सदन के सम्मुख खुले प्रांगण में आगरा की नाट्य संस्था 'रंग कर्म' ने बादल सरकार के बहुचर्चित नाटक 'जुलूस' का मुक्ताकाशी 'प्रयोग नुक्कड़ नाटक के रूप में किया। इन नाट्य प्रदर्शनों के साथ ही विश्व नाट्य दिवस के उपलक्ष्य में 'भारतीय कला संघ' ने अकादमी के सहयोग से एक विचार गोष्ठी 'आगरा की रंगचेतना सीमा और सम्भावनाएँ' का आयोजन करके आगरा के रंगमंच की

समस्याओं पर समस्त नाट्य संस्थाओं द्वारा सामूहिक रूप से विचार करने का सिलसिला शुरू किया।

करीब ५ साल पहले हुई अकादमी की नाटक प्रतियोगिता के पश्चात् यह दूसरा मौका था जब आगरा के दर्शकों को आगरा की नाट्य प्रस्तुतियों के साथ-साथ आगरा के बाहर के नाट्य दलों के नाटक देखने को मिले बल्कि इस बार प्रतियोगिता के मुकाबले ज्यादा बेहतर नाटक देखने को मिले। इससे सबसे अधिक लाभ आगरा की नाट्य संस्थाओं को यह हुआ कि वे अपने काम के स्तर का मुकाबला प्रदेश के दूसरे प्रमुख नाट्य केन्द्रों के काम से कर सकें।

इस नाट्य समारोह की अवधि में मंचित पाँच नाटकों द्वारा विभिन्न प्रकार के नाट्य प्रयोग एक साथ देखने को मिले 'दुलारी बाई' और 'होहोलिका' संगीतात्मक एवं लोकनाट्य शैली के प्रयोग थे तो 'सिंहासन खाली है' प्रतीकात्मक व्यंग्य नाटक था। 'जुलूस' लीक से हटकर एक नवनाट्य प्रयोग था तो 'अपनी पहचान' आधुनिक रंगोपकरणों के चमत्कार से ओतप्रोत नाट्य प्रयोग था। इन सभी नाटकों में 'मेघदूत' का 'दुलारी बाई' सर्वाधिक साफ़ सुथरे नाट्य प्रयोग के रूप में उभर कर आया। अभिनय, दृश्य योजना, रंगदीपन एवं संगीतात्मकता सभी दृष्टि से ये एक संतुलित नाट्य प्रयोग था। 'सिंहासन खाली है' के अभिनेताओं ने भी अपनी प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया। 'होहोलिका' के पात्रों में अभिनय स्तर की एक रूपता का अभाव था लेकिन कुल मिला कर इस नाटक ने भी दर्शकों पर अच्छा प्रभाव डाला। नुक्कड़ नाटक 'जुलूस' के कलाकारों ने अभिनय क्षमता का अच्छा परिचय दिया किन्तु कोरस गायन में कलाकारों का बेसुरापन खटकता रहा, आलेख भी राजनैतिक अतिरंजना से ग्रस्त लगा कुछ अंश देश-काल की दृष्टि से अप्रासंगिक भी लगे। 'अपनी पहचान' में उत्तम की भूमिका के अतिरिक्त अन्य सभी पात्रों का अभिनय कमजोर लगा अर्पणा की भूमिका करने वाली अभिनेत्री का उच्चारण दोष और संवादों में अटकना बहुत खटका। इस नाटक में मंच की शालीनता का अतिक्रमण होता देखा गया स्त्री-पुरुष का बारंबार हम-बिस्तर होना, काम प्रसंगों का संकेत मात्र करने के स्थान पर उन्हें जरूरत से ज्यादा उभारना, पूरे नाटक की अवधि में शराबखोरी की पुनरावृत्ति ने नाटक को अधिक नंगा बनाने में सहायता पहुँचाई। भव्य सेट, आधुनिक उपकरणों द्वारा स्लाइडों एवं स्पेशल इफेक्ट्स के तामझाम के बावजूद नाट्य कृति के रूप में यह नाटक दर्शकों को अधिक प्रभावित न कर सका। 'केवल वयस्कों के लिये' के ठप्पे के साथ इस नाटक के व्यावसायिक

प्रयोग किये जा सकते हैं किन्तु अकादमी जैसी संस्थाओं द्वारा ऐसे नाटकों को प्रश्रय देना उचित नहीं लगता।

समारोह के अंतिम नाटक के प्रदर्शन के पूर्व अकादमी के सहायक सचिव डा० शरद नागर ने आगरा के नाट्य प्रेमियों एवं स्थानीय नाट्य-संस्थाओं द्वारा प्रदान किये गये सहयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की। नाट्य समारोह समिति के अध्यक्ष डा० विद्यानिवास मिश्र ने इस सफल नाट्य समारोह के लिये अकादमी को बधाई दी और आगरा की जनता की ओर से शासन से जोरदार शब्दों में मांग की कि आगरा के सांस्कृतिक विकास के लिये सांस्कृतिक विभाग द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित किया जाये और संगीत नाटक अकादमी द्वारा आगरा में नियमित रूप से संगीत और नाटक के उत्कृष्ट कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये। प्रेक्षागृह में उपस्थित लगभग एक हजार से अधिक दर्शकों ने डा० मिश्र की इस सामयिक मांग का करतलध्वनि से समर्थन किया।

निस्संदेह आगरा नाट्य समारोह उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी का एक अत्यन्त सफल और सुनियोजित आयोजन था जिसे अकादमी ने एक महीने की अल्पावधि में इतने व्यवस्थित ढंग से किया। आशा है कि यह आयोजन आगरा के नाट्यान्दोल को गति प्रदान करेगा यह एक सफल दिशावाहक आयोजन था। इस सफल आयोजन के लिये आगरा नाट्य समारोह समिति के अध्यक्ष डा० विद्या निवास मिश्र एवं सभी सदस्य तथा अकादमी के सहायक सचिव डा० नागर और प्रबन्धक श्री अवधेश श्रीवास्तव जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ता बधाई के पात्र हैं।

—शाह मार्केट, आगरा

गुजराती नाटक

सोनाली

मूल आलेख
प्रागजी डोसा
हिन्दी रूपान्तर
डा० शरद नागर

पात्र
डॉ० रूपेश
काका करसन दास
डॉ० कौशिक
डॉ० ध्रुव
सी० आई० डी० इंसपेक्टर सोहन
सोनाली
वंदना

(इस नाटक के मंचन के पूर्व रूपान्तरकार की लिखित अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य है।
—संपादक)

अंक-पहला

स्थान : डॉ० रूपेश मेहता का ड्राइंग रूम।

समय : रात्रि के साढ़े ८ बजे।

अपस्टेज लेकर प्रवेश-द्वार से लगा बड़ा पैनल। दायीं ओर लगी बड़ी खिड़की—जिसमें से बाहर का बगीचा दीखता है। सम्पूर्ण कक्ष सुरुचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ —एक ओर टेलीफोन—खिड़की की बगल से ऊपर जाने के लिए सीढ़ियाँ—इसके नीचे एक स्विग दरवाजा। ड्राइंगरूम में इस वक्त कोई नहीं है। टेलीफोन की घंटी बजती है, ३५ वर्षीय डॉ० रूपेश प्रवेश करता है और फोन उठाता है।

रूपेश : डॉक्टर रूपेश स्पीकिंग। कौन? डॉक्टर कौशिक? खैरियत तो है—इस वक्त कैसे फोन किया? हास्पिटल में डीन की जगह खाली पड़ी है।··· हाँ, वो तो मुझे मालूम है।···हाँ, उस एपॉइन्टमेन्ट के बारे में मीटिंग थी।···व्हाट? डॉ० ध्रुव खड़े होने वाले हैं? तुमसे किसने कहा।···सेठ? गोपालदास सेठ ने?···हाँ-हाँ ठीक है, डॉ० ध्रुव भले ही खड़े हो जायें··· इस जगह के लिए यों मेरे अलावा कोई और डिजर्व नहीं करता···हाँ-हाँ ···अरे, कमेटी के मेम्बर ये बात अच्छी तरह जानते हैं।···हाँ-हाँ, अच्छा; गुडनाइट।

[रूपेश फोन रखता है। इसी वक्त कार की हेडलाइट का प्रकाश खिड़की में पड़ता है—उसके बाद एक अजीब सी आवाज, और एक स्त्री की चीख सुनकर रूपेश खिड़की की ओर दौड़ता है।]

रूपेश : एक्सीडेन्ट—ओह गॉड।

[रूपेश दौड़कर बाहर जाता है—कुछ क्षण बाद एक २५ वर्षीय सुन्दर युवती—सोनाली—के साथ वापस आता है। सोनाली के बायें कन्धे से खून बह रहा है और वह रूपेश का सहारा लेकर चल रही है, अत्यन्त तुनक मिजाज है रूपेश उसे सोफे के ऊपर बैठाता है। सोनाली अपना पर्स सोफे पर रखती है।]

सोनाली : ईडियट्स ।

रूपेश : किसे कह रही हो।

सोनाली : आपको क्या लगता है ! आपको कह रही हूँ ?

रूपेश : तो कौन है वह खुशकिस्मत ?

सोनाली : वही जो इस तारीफ के लायक है। बाहर रास्ते में इतना बड़ा गड्ढा है—उसे भरवाते क्यों नहीं ?

रूपेश : मैंने क्या सड़क सुधार का ठेका ले रखा है ?

सोनाली : इन सुधार के कामों के लिए ऊँची कुर्सियों पर जो शोभायमान हैं, आपने उनको शिकायत भेजी ? (रूपेश मौन अन्दर जाता है) आप किधर गये ? (रूपेश मेडिकल बैग लेकर आता है।)

रूपेश : देखूँ, कहाँ चोट लगी है ?

सोनाली : मुझे हाथ न लगाइयेगा !—ये पेटी कैसी है ?

रूपेश : पेटी ? मैडम ये हज्जाम की पेटी नहीं, मेडिसिन बैग है ! —और मैं डॉक्टर हूँ।...चलो मुझे देखने दो।

सोनाली : डॉक्टर हैं, तो क्या देखने का हक मिल गया ?

रूपेश : जी हाँ मैडम। दिस इज माई ड्यूटी—कम ऑन, चुपचाप इस सोफे पर लेट जाओ।

सोनाली : लेट जाऊँ ? जखम कन्धे पर हुआ है, इसमें लेटने की क्या जरूरत है ?

रूपेश : अच्छा बाबा—बैठी रहो।

[रूपेश, सोनाली के कन्धे पर से ब्लाउज को जरा नीचा खिसकाता है—सोनाली उसे और नीचे कर देती है। डॉक्टर गॉज पर मर्क्यूरोक्रोम डालकर कन्धे पर रखता है और पट्टी बाँधता है। सोनाली चीख उठती है।]

सोनाली : ओह। इट्स टेरिबुल।

रूपेश : ऐसी तो बहुत ज्यादा चोट भी नहीं लगी है।

सोनाली : मेरी पच्चीस हजार की कार का तो कबाड़ा हो गया—अब मैं घर कैसे जाऊँ ?

रूपेश : मैं डब्ल्यू० आई० ए० ए० ब्रेक डाउन सर्विस को फोन करता हूँ। ट्रक के साथ बाँधकर तुम्हारी गाड़ी ले जायेंगे। डब्ल्यू० आई० ए० ए० का तुम्हारा मेम्बर शिप नम्बर क्या है ?

सोनाली : मुझे नहीं पता। कार मेरे भाई की है।

रूपेश : तुम्हारे भाई का नाम ?

सोनाली : सुरेश—सुरेश सुखाड़िया ।

रूपेश : क्या वह सूखी चीजों का व्यापार करते हैं ?

सोनाली : (सवाल की उपेक्षा करके) डॉक्टर, आपका सरनेम क्या है ?

रूपेश : मेहता ।

सोनाली : तो मेहतागीरी छोड़कर डॉक्टरी कैसे करने लगे ?

रूपेश : (हँसकर) आई सी ।···वाई द वे, तुम कहाँ रहती हो ?

सोनाली : क्यों ? आप मेरा पता-ठिकाना क्यों पूछ रहे हैं ?

रूपेश : अरे किसी वक्त तुम्हारे यहाँ चला आऊँ —महज इसलिए ।

सोनाली : ह्वाट ?—ऐण्ड—ह्वाय ?

रूपेश : विजिट पर ।

सोनाली : (हँसकर) यू वांट ए डेट विद मी ?

रूपेश : शी ! —अरे विजिट !—शायद किसी वक्त तुम्हें मेरी जरूरत ही पड़ जाये तो—

सोनाली : (कराहते हुए) किस बात की जरूरत पड़ जाये डॉक्टर ।

रूपेश : अ···अ···बीमारी ।

सोनाली : इसके लिये मेरे अपने फैमिली डॉक्टर हैं। वैसे (तीक्ष्ण दृष्टि से घूरते हुए) क्या अब आप मेरे फैमिली मेम्बर बनना चाहते हैं ?

रूपेश : नो थैंक्यू । अच्छा टैक्सी मँगाऊँ ?

सोनाली : टैक्सी ! किसलिये ?

रूपेश : घर नहीं जाना है ?

सोनाली : (सोफे पर ही सोने का उपक्रम करती है) नहीं ।

रूपेश : ऐ-ऐ···उठो-उठो !

सोनाली : उठूँ ! लेकिन क्यों ?

रूपेश : अभी तो तुमने कहा था घर कैसे जाऊँगी—चलो, मैं अपनी कार से छोड़ देता हूँ । (रूपेश सोनाली को सहारा देकर चलता है)—रुको, तुम्हारी पर्स···। (सहारा छूटते ही सोनाली एकदम गिर पड़ती है । रूपेश उसे उठाकर पुनः बैठाता है । वह फिर सोफेपर पसर जाती है ।) अरे, ऐ ! ···घर नहीं जाना है क्या ?

सोनाली : नहीं । मुझे यहाँ बहुत अच्छा लगता है ।

रूपेश : क्या ?—वहाँ अच्छा लगता है ! (रूपेश ब्रान्डी निकालकर सोनाली को देते हुए) ये लो, इसे पी लो ।

सोनाली : क्या है ?

रूपेश : ब्रान्डी । फुर्ती आ जायेगी । (सोनाली पी लेती है)…अब कैसा लगता है ?

सोनाली : फुर्ती ।

रूपेश : अब तो चलो ।

सोनाली : चलो । (उठने का उपक्रम करते हुए) आपका बेडरूम किधर है ?

रूपेश : अरे बेडरूम में नहीं…अपने घर ।

सोनाली : नहीं, मैं अपने घर नहीं जाऊँगी ।

रूपेश : क्यों ?

सोनाली : मैंने अपने भाई से कुछ नहीं बताया था । वह तो सोच रहे होंगे कि मैं उनकी कार लेकर रफूचक्कर हो गई हूँ ।

रूपेश : हूँ—कहाँ जाने के लिए निकली थीं ।

सोनाली : डॉक्टर, मेरे जाती मामले में कोई माथा-पच्ची करे, यह मुझे कतई पसंद नहीं ।

रूपेश : अच्छा बाबा, तो कहाँ रहोगी ?

सोनाली : यहीं आपके घर पर—रात भर—।

रूपेश : ह्वाट ? यहाँ ! —लेकिन मेरे घर में तो कोई भी नहीं है ।

सोनाली : वो कैसे ? हम-दोनों तो हैं । —वेल डॉक्टर, बेडरूम किधर है ?

रूपेश : ऊपर ।

सोनाली : तो चलो न ।

रूपेश : लेकिन एक…एक ही बेडरूम में ?

सोनाली : क्यों ? क्या दिक्कत है ? मैं तुम्हें खा तो नहीं जाऊँगी ।

रूपेश : लेकिन…लेकिन मेरे यहाँ और कमरे भी हैं ।

सोनाली : धत् !—तुम्हें संकोच होता है ?

रूपेश : हाँ, मैं शादीशुदा हूँ ।

सोनाली : ह्वाट ए पिटी !

रूपेश : क्यों ? इसमें 'पिटी' वाली क्या बात है ?

सोनाली : शादीशुदा हो न, इसलिए । गाय को जैसे एक खूँटे में बाँध दो न, वैसे ही एक स्त्री से बँधे रहो । इसमें रोमांस कहाँ रह जाता है ?

रूपेश : क्यों, अपनी बीबी के साथ रोमांस नहीं होता ?

सोनाली : (हँसकर) ओह डॉक्टर, ह्वाट ए जोक ! अपनी बीवी—और रोमांस ! 'ओह माई गॉड'!

रूपेश : इसमें बेचारे गॉड को क्यों घसीट रही हो !

सोनाली : ओह डॉक्टर···। (हँसते-हँसते अचानक गम्भीर हो जाती है।) अच्छा, तो कहाँ है तुम्हारी दुम !

रूपेश : दुम ?

सोनाली : अरे, वही—तुम्हारी बीवी !

रूपेश : वह मेरे चाचा के साथ बड़ौदा गयी है—मेरी बहन के लड़के की शादी में।

सोनाली : डॉक्टर, मुझे ब्रान्डी का दूसरा डोज दोगे ?

(डॉक्टर ब्रान्डी निकालता है। सोनाली अपना पर्स खिसकाती है।)

सोनाली : (लेते हुए) डॉक्टर, डू यू बिलीव इन गॉड ?

रूपेश : हंड्रेड पर्सेन्ट।

सोनाली : देखो डॉक्टर, हंड्रेड पर्सेन्ट में एक पर्सेन्ट भी कम न करना। सच कहो न, तुम और तुम्हारी बीवी कभी लड़ते-झगड़ते नहीं हो ?

रूपेश : वेल—घर में चार बर्तन होते हैं तो बजते ही हैं।

सोनाली : किसी शायर ने कहा है, 'जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझ लिया।' वही—सेम ओल्ड स्टोरी—महज ढोंग। मन में कुछ, जबान पर कुछ। तुम लोग मुखौटा क्यों पहने रहते हो ? टेल डॉक्टर, टैल मी ऑन ओथ, क्या कभी यह नहीं सोचते कि काश शादी न की होती तो ज्यादा अच्छा होता।

रूपेश : क्या·····?

सोनाली : क्या···या कुछ नहीं, टैल मी द ट्रुथ।

रूपेश : यह तो तुमने ऐसा सवाल पूछा है, जैसे कोई छोटा बच्चा इम्तिहान में पास न होने पर सोचने लगे कि इससे तो अच्छा था मैं इम्तिहान में बैठता ही नहीं।

सोनाली : (उछलकर) देयर यू आर ! इसका मतलब यह हुआ कि शादी के इम्तिहान में तुम पास नहीं हो सके—क्यों ?

रूपेश : नहीं। सब सब्जेक्ट्स में तो नहीं, लेकिन कुछ में···।

सोनाली : दैट्स राइट, अब चलो।

रूपेश : कहाँ ?

सोनाली : ऊपर।

रूपेश : नो।

सोनाली : ओ बाबा, बात रोमांस की थी न ? तो आओ, मैं तुम्हें रोमांस का अनुभव कराऊँ।

रूपेश : नहीं।

सोनाली : डॉक्टर, अभी जब तुमने मेरा हाथ पकड़ा था तो तुम्हें कोई सेंसेशन हुआ था ?

रूपेश : कतई नहीं, मैं डॉक्टर हूँ।

सोनाली : (हँसकर) गोया कि डॉक्टर आसमान से टपक पड़ते हैं ? —यू लायर, झूठे !

रूपेश : मैं—झूठा !

सोनाली : सरासर ! दूसरी स्त्री की इच्छा न करने वाला इन्सान आज तक दुनियाँ में पैदा ही नहीं हुआ।

रूपेश : लेक़िन मैं अपनी फेमिली लाइफ़ से पूरी तरह सैटिस्फाइड हूँ।

सोनाली : दौलत से या सेक्सुअली ?

रूपेश : ओफ ! तुम औरत हो कि क्वेश्चन-पेपर ?

सोनाली : वेल डॉक्टर, तुमने कभी आँख लड़ाई है किसी से ?

रूपेश : एक भली औरत मेरी पत्नी है। सुख से जी सकूँ इतना पैसा है हास्पिटल में डीन की जगह खाली हुई है, वह अगर मुझे मिल जाय तो बस सोने में सुहागा है।

सोनाली : हूँ ! तो वह जगह मिलने में क्या अड़चन है ?

रूपेश : हमारे हास्पिटल के सीनियर डॉक्टर ध्रुव भी उसी पद के उम्मीदवार हो गये हैं।

सोनाली : डॉक्टर, अगर मैं डीन बनने में तुम्हारी मदद करूँ तो !

रूपेश : तुम—वो कैसे ?

सोनाली : यह सब मुझ पर छोड़ो। औरतों के पास बहुत से हथियार होते हैं। अगर वह एक भी हथियार का इस्तेमाल कर बैठे तो आदमी पनाह माँगने लगे। लेकिन पहले वचन दो, अगर तुम्हारा काम कर दूँ तो तुम मेरा काम करोगे ?

रूपेश : कैसा काम ?

सोनाली : काम वक्त आने पर बताऊँगी। गिव मी योर प्रॉमिस !

रूपेश : प्रॉमिस तो काम जानने के बाद ही कर सकता हूँ।
सोनाली : जो काम डॉक्टरों के बस का है, मेरा काम उससे बाहर नहीं होगा।
रूपेश : देन, आई प्रॉमिस यू।
सोनाली : तब तो तुम डीन तो क्या, अपना हास्पिटल खुद भी खड़ा कर सकते हो— मुझमें इतनी ताकत है।
रूपेश : क्या मतलब ?
सोनाली : तुमने कहा था, कि तुम्हारे एक चाचा हैं।
रूपेश : हाँ, कहा था।
सोनाली : उनके पास तो महज एक अपनी ही जान होगी ?
रूपेश : हाँ।
सोनाली : तो चाचा जी को अपनी दौलत तुम्हें दे देनी चाहिये।
रूपेश : वह क्यों ? अभी वह जिन्दा हैं।
सोनाली : क्या उम्र है तुम्हारे चाचा की ?
रूपेश : सत्तर साल।
सोनाली : तो···तो उन्हें अब पेंशनर्स कालोनी में चला जाना चाहिये। सरकार को एक वृद्धाश्रम बनवाना चाहिये जिसमें सारे बुड्ढों को ढकेल दिया जाये। दो वक्त खाना दिया जाये, जरूरत भर के कपड़े दिये जायें—और अगर कपड़े न भी हों तब भी चलेगा।
रूपेश : माई गॉड ! हाऊ स्ट्रेंज यू आर !
सोनाली : जवानी का बोलबाला है डॉक्टर, माइट इज राइट। और यह शक्ति जवानों के पास ही होती है। हाय ! यह मजे, ये मस्ती, ···।
रूपेश : (व्यंग्य से) और इस मस्ती के आलम में आदमी और जानवर में कोई फर्क नहीं रह जाता।
सोनाली : अरे डॉक्टर, वक्त आने पर आदमी जानवर से भी बदतर हो जाता है। असलियत तो यह है कि तुम जो बाहर से दिखते हो, भीतर से नहीं हो— हाथी के दाँत दिखाने के और, खाने के और—लेकिन समाज के डर से तुम बोल नहीं सकते। जाने दो डॉक्टर, एक बात पूछूँ।
रूपेश : तुम्हारी एक कथा में बहुतेरी उपकथायें होती हैं।
सोनाली : (शोखी से) सच ! मेरी बातों में रस आता है ?
रूपेश : वेल—यस।
सोनाली : ···नते हो क्यों ? —मेरे अन्दर रस जागा है।

रूपेश : ओह, नो—नो !

सोनाली : देखा ढोंग ! तुम्हारी आँखें सब कुछ कह रही हैं। —खैर मान लो, किसी पेशेन्ट को देखने तुम कहीं बाहर जाते हो। रेलवे कम्पार्टमेंट में तुम्हें एक सुन्दर युवती मिल जाती है···।

रूपेश : जैसे कि तुम।

सोनाली : हाँ, यही मान लो।

(क्षणिक अन्धकार के बाद पुनः प्रकाश— दृश्य वही है, किन्तु दोनों का अभिनय ऐसा है, मानो अपरिचित हों और ट्रेन के एक कम्पार्टमेन्ट में सफर कर रहे हों।

सोनाली : आपका नाम ?

रूपेश : डॉ० रूपेश मेहता, साइकियाट्रिस्ट।

सोनाली : ग्लैड टु मीट यू।

रूपेश : सो एम आई। आपका शुभ नाम ?

सोनाली : सोनाली—मिस सोनाली।

रूपेश : मिस सोनाली ! ब्यूटीफुल। बाईदवे कितनी सीट का कम्पार्टमेंट है यह ?

सोनाली : चार। बाकी दोनों पैसेन्जर बूढ़े लोग हैं। बाहर हैं, अभी आ जायेंगे। ···लेकिन डॉ० मेहता, ये दोनों पैसेन्जर जल्दी उतर जायें तो अच्छा हो ! ···क्यों ? है न।

रूपेश : या फिर वो लोग डाइनिंग रूम में चले जायें।

सोनाली : लेकिन ठहरो—ऐसा करते हैं··· (खिड़की से बाहर सिर निकालकर मानो बाहर खड़े आदमी से बात कर रही हो) ऐ कंडक्टर ! प्लीज—बगल का कूपा (कम्पार्टमेंट) खाली है, वो हमें दे दीजिये। —जी हाँ, हम कपल हैं—ये लो, पच्चीस रुपये ! —(फिर कुछ पल के बाद उठकर जैसे कूपे का दरवाजा बन्द करती है) वेल डॉक्टर. अब हमने कूपे को बन्द कर लिया है। अब मैं तुम्हारी वाइफ हूँ, ऐसा बर्ताव करना।

रूपेश : कहाँ ?

सोनाली : लोगों के सामने—और कहाँ। लोग यही समझेंगे कि कितना सुखी जोड़ा है। तुम्हें आनन्द नहीं होगा ?

रूपेश : वेल—आफकोर्स होगा। लेकिन···आखिर मैं भी तो आदमी ही हूँ—यू सी···

सोनाली : (डॉक्टर को कन्धे से धक्का देते हुए) दैट्स ए गुड ब्वॉय। (फिर अपने पर्स में से एक सेन्ट की शीशी निकालती है) वेल डॉक्टर, इस सेन्ट का नाम क्या है ?

रूपेश : प्रिया।

सोनाली : (डॉक्टर पर जैसे गिरी पड़ती है) ओह डार्लिंग ! (क्षणिक अन्धकार के बाद प्रकाश होता है। प्रातःकाल का समय है। ड्राइंग रूम में कोई नहीं है फोन की घन्टी बज रही है। रूपेश आकर फोन उठाता है।)

रूपेश : हैलो, डॉक्टर रूपेश मेहता स्पीकिंग—कौन ? कौशिक ? क्या बात है ? —हाँ-हाँ, आ जाओ। तुम्हारे लिये तो मेरे घर के दरवाजे हमेशा खुले हैं। —ओह यस ! काम ऑन, यू आर मोस्ट वेलकम !

(रिसीवर रखता है तभी सोनाली चाय का कप लिये अन्दर से आती है। आकृति से इस समय वह संयत लगती है, कपड़े व्यवस्थित हैं। बात-चीत और बर्ताव भी बदला हुआ है।)

सोनाली : क्या टाइम हुआ है डॉक्टर ?

(सोनाली कप रखती है। डॉक्टर के पास घड़ी नहीं है।)

रूपेश : कान्ट से एक्जेक्टली : लेकिन छः बज गये होंगे।

सोनाली : आपकी पत्नी और चाचा जी तो आज सवेरे ही आने को हैं न ?

रूपेश : बॉम्बे एक्सप्रेस से।

सोनाली : गाड़ी तो स्टेशन पर आ गई होगी ?

रूपेश : इंडियन रेलवेज की गाड़ियाँ अगर टाइम पर आने लगें तो भला तुम इस कदर बेचैन क्यों नजर आओ ?

सोनाली : अब मुझे यहाँ से चले जाना चाहिए। रातभर आपके यहाँ रही हूँ, यह अगर उनको पता चल गया तो ठीक न होगा (रूपेश सोनाली को अपलक देखता रहता है) इस तरह टकटकी बाँध कर क्या देख रहे हो ?

रूपेश : मैं सोच रहा हूँ, क्या यह तुम बोल रही हो ?

सोनाली : ऐसा क्यों सोच रहे हैं ?

रूपेश : कल की रंगीली कहानी याद नहीं ? तुम्हारे उस रंगीन मिजाज और इस वक्त के तुम्हारे रूप में जमीन-आसमान का फर्क है। मैं सोचता हूँ कि इसी औरत ने कल रात मेरे-जैसे संयमी आदमी को शीशे में उतारने के लिये कैसे-कैसे दाँव-पेंच खेले थे···और आज वही औरत मेरे सामने···।

सोनाली : डॉक्टर, रात को क्या-क्या गुजर गया मैं ऐसा क्या-क्या बढ़-चढ़कर बोल गई मुझे याद नहीं। —आई एम सॉरी।

रूपेश : तुम बिल्कुल फिल्मी वैम्प की जीती-जागती तस्वीर बनकर जो जी में आया, कह गयीं।

सोनाली : ओह गॉड !

रूपेश : तुम्हें कुछ भी याद नहीं ?

सोनाली : हल्का-सा बिल्कुल फेन्ट सा याद रह गया है।

रूपेश : तुम्हारी कार का ऐक्सीडेन्ट हो गया था—याद है ?

सोनाली : हाँ—और आप वहाँ आये और मुझे यहाँ ले आये।

रूपेश : राइट। फिर मैंने तुम्हारे जख्म पर दवा लगाई। उस वक्त तुम्हारी बाँह के ऊपर का ब्लाउज नीचे खिसक गया था, मैंने ठीक करने की कोशिश की तो तुमने जान-बूझकर उसे और नीचा कर दिया। फिर तुमने कहा कि एक आदमी एक ही पत्नी के साथ कैसे बँधा रहता है ? याद है।

सोनाली : नहीं।

रूपेश : उसके बाद मेरे चाचा के बारे में तो ऐसी बातें कहीं कि मुझे ऐसा लगने लगा कि अगर तुम्हारा वश चले तो तुम कहीं मेरे चाचा का खून करने पर ही आमादा न हो जाओ।

सोनाली : ओह गॉड। क्या मैंने यह कहा था कि आपके चाचा जी का खून कर डालूँगी ?

रूपेश : नाट एक्जैक्टली। पर मुझे चाचा की जमा पूँजी दिलाने की बात तो कही थी।

सोनाली : फिर ?

रूपेश : फिर तुम एकदम एक्साइटेड हो गईं। हम लोग ऊपर गये। मैंने तुम्हें दूसरे कमरे में सोने को ढकेल दिया वरना शायद मैं अपनी पत्नी को मुँह दिखाने लायक भी न रहता।

सोनाली : अब तो मुझे फौरन यहाँ से चला जाना चाहिए। मैं नहीं चाहती कि मेरी वजह से आप पति-पत्नी के बीच कुछ झगड़ा हो।

रूपेश : नहीं ठहरो। बीइंग ए साइक्याट्रिस्ट मैं तुम्हारा केस लेना चाहता हूँ।

सोनाली : लेकिन मुझे कोई तकलीफ नहीं है।

रूपेश : है ! मैंने तुम्हारे जैसे बहुतेरे पेशेन्ट्स का इलाज किया है। तुम्हारी जिन्दगी में दो पहलू हैं। एक नदी के निर्मल जल-जैसा शान्त। लेकिन

जब इस नदी में उफान आता है तो यह बड़ी खौफनाक वन जाती है। उसकी शक्ल बिगड़ जाती है। तुम अपने होशोहवास खो वैठती हो। लेकिन ये मर्ज ठीक हो सकता है।

सोनाली : कैसे ?

रूपेश : मर्ज की वजह ढूंढ़कर।

सोनाली : यू आर सो फाइन डॉक्टर। मैं आपके ऑफर पर गौर करूंगी। लेकिन आप मेरी एक सलाह मानेंगे ?

रूपेश : क्या ?

सोनाली : हम दोनों के बीच जो कुछ भी···यानी अगर कोई अश्लील बात हुई हो तो वह आप अपनी पत्नी से नहीं वतायेंगे—इस बात का मुझे पूरा यकीन है। न आप इस बात का जिक्र करेंगे कि मैंने सारी रात यहां गुजारी है —आपके इस सूने घर में। पहले यह प्रामिस कीजिए।

रूपेश : क्या मतलब ? क्या यह न कहूं कि एक लेडी पेशेन्ट आई थी ?

सोनाली : नहीं। कोई भी लेड़ी-पेशेन्ट रात को अकेली न डॉक्टर के घर आती है और न ही रात भर रहती है। मैं औरत हूं और औरत के सोचने समझने के ढंग को समझती हूं। आप साइक्याट्रिस्ट होते हुए भी यह नहीं जान सकते कि कितनी ही बातें पति को पत्नी से और पत्नी को पति से छिपा कर रखनी पड़ती हैं। —अव मैं जाऊं ?

रूपेश : यह लो, तुम्हारी कार की चाभी। तुम सो गई तव मैंने डब्ल्यू० आई० ए० ए० की ब्रेक डाउन सर्विस को फोन किया था। उनका आदमी आया था। कार को ठीक करके कह गया है कि गाड़ी चलाने लायक है।

सोनाली : थैंक्स डॉक्टर।

(सोनाली अपना पर्स लेकर चली जाती है, लेकिन सेन्ट की शीशी वहीं भूल जाती है) मोटर के स्टार्ट होने की आवाज। —वंदना और चाचा करसनदास आते हैं। वंदना गम्भीर प्रकृति की, सौम्य महिला है। आधुनिका होते हुए भी पाश्चात्यता की छाप नहीं है। चाचा मन-मौजी हैं—पहनावा पाश्चात्य है, देखने में होटल के मैनेजर नजर आते हैं।

चाचा : आ पहुँचे। घर, घर ही है—होमस्वीट होम छोड़कर घर के बाहर जाकर राजा के महल में भी बस जाओ, पर घर जैसा सुख कहीं नहीं मिलता। बाहर मशीन की तरह ऐसे चलना पड़ता है कि दम लेना दूभर हो जाता है—क्यों रूप क्या ख्याल है तुम्हारा ?

रूपेश : सच है चाचा।

चाचा : तुम क्या जानो बरखुरदार, तुम डॉक्टरों की जिन्दगी भी कोई जिन्दगी है ! एक अमेरिकन मैग्जीन में पढ़ा था कि चौबीस घंटों में से डॉक्टर आठ घंटे अपने कन्सल्टिग रूम में रहते हैं, आठ घंटे विजिट पर, चार घंटे अपने हास्पिटल में और सिर्फ चार घंटे घर में रहते हैं—यानी कि डॉक्टर का घर में रहना न रहना बराबर।

रूपेश : फिर तो फैमिली प्लानिंग का अवार्ड किसी डॉक्टर को ही मिलना चाहिए।

वंदना : चाचा, जी पहले आप नहायेंगे या पहले चाय लेंगे ?

चाचा : अरे मेरे नहाने के लिए इतनी उतावली क्यों है ? पहले चाय ला !

वंदना : (रूपेश से) आपके लिए भी चाय लाऊँ…?

रूपेश : नहीं।

वंदना : आप पी चुके हैं ?

रूपेश : हाँ।

वंदना : खुद बनाई थी ?

रूपेश : नहीं।

वंदना : तब ?

रूपेश : तब क्या ?

वंदना : तब चाय आपको किसने बनाकर दी ?

रूपेश : क्या चाय ?…हाँ, हाँ, मैंने खुद बनायी थी।

वंदना : लेकिन अभी मैंने आपसे पूछा था कि आपने खुद बनायी थी तो आपने कहा 'नहीं'।

रूपेश : क्या ? मैंने नहीं कहा था ?…ओह यम ! तुमने पूछा खुद बनायी थी—तो मैं दवा समझा।

वंदना : दवा ? दवा का तो मैंने नाम भी नहीं लिया ? दवा किसके लिए बनानी थी ? कोई आया था ?

चाचा : (सेन्ट की शीशी उठाकर) प्रिया ! वाह डॉक्टर तुम्हारा शौक तो बहुत ऊँचा है ।

वंदना : क्या है ?

चाचा : प्रिया है । ऐसी-वैसी नहीं, सेन्टेड प्रिया !

वंदना : ये सेन्ट की शीशी यहाँ कहाँ से आई ? डॉक्टर साहब, मैं आपसे ही पूछ रही हूँ, आपका ध्यान किधर है ?

रूपेश : ये···ये तो मैं तुम्हारे लिये लाया था ।

वंदना : मेरे लिये ! सेन्ट ? आप तो जानते ही हैं कि मुझे सेन्ट लगाने का कोई शौक नहीं है ।

चाचा : अरे बेटी, शौक नहीं है तो अब शौक करो । डॉक्टर को जब शौक चर्राया हैं तो अपने पति के पद्चिन्हों का अनुसरण भी करो । यही तो पतिव्रता का कर्म है ।

वंदना : ये कब लाये ?

रूपेश : ये···ये कल ।

चाचा : (शीशी देखकर) प्रिया ! वाह ! बेटा, तुम नहा चुके ?

रूपेश : नहीं तो···क्यों ?

चाचा : शीशी तो आधी इस्तेमाल हो चुकी है । मुझे लगा कि बाथरूम के पानी में आधी शीशी तुमने उलट दी होगी ।

रूपेश : क्या ! शीशी आधी खाली है ? देखूँ—ये दूकानदार भी कैसे बदमाश होते हैं ? लोगों को कैसे ठगते हैं ? आज ही दूकान पर जाकर शिकायत करूँगा । (शीशी लेकर) अरे वंदना, मेरी चाय मेरे कमरे में ही ले आना ।

वंदना : पर आप तो चाय पी चुके हैं न ?

रूपेश : हाँ ? —हाँ —दूसरा कप सही ।

(रूपेश ऊपर जाता है ।)

वंदना : चाचाजी, आपको डॉक्टर साहब का वर्ताव कुछ बदला-बदला-सा नजर नहीं आता

चाचा : कतई नहीं । यह तो कुदरत का उसूल है ।

वंदना : कुदरत का उसूल ?—कैसा उसूल ?

चाचा : अरे वसन्त ऋतु आती है तो फूलों के वृक्ष खिल उठते हैं ।

वंदना : चाचाजी, आप तो मजाक कर रहे हैं।

चाचा : मजाक ! अरे बिटिया, हकीकत है। डॉक्टर के मिजाज में बहार आ गई है। अब फूल खिलेंगे। मुझे तो तेरी चाची की याद आ रही है—दो-चार दिन छुटकारा पाने के लिये जब मैं कहता—'अरी सौभाग्यवती, तपेश्वरी देवी का मेला है जा दर्शन कर आ।' तो उल्टे मेरे ही गले पड़ती और मुझे भी ढकेल कर तपेश्वरी जी के दर्शन कराने ले जाती।

वंदना : नहीं चाचाजी, डॉक्टर ऐसे नहीं हैं।

चाचा : तो मैं कब कह रहा हूँ कि ऐसा है। पर ऐडवांस बुकिंग हो गई है। हाँ, एक बात है। बातें बनाने में मेरा भतीजा अभी नौसिखिया लगता है। ऐसे 'में-में, कें-कें' करने की क्या जरूरत थी ! अरे, साफ-साफ कह देता कि एक फीमेल पेशेन्ट आई थी और यह सेन्ट को शीशी भूल गई—अगर ऐसा कह देता तो क्या उसके चाचा की जमा घट जाती ?

वंदना : तो आपका ख्याल है यहाँ कोई आया था ?

चाचा : कोई फेमिनिन जेंडर……

वंदना : तो फिर डॉक्टर हमसे यह बातें क्यों छिपा रहे हैं ?

चाचा : हूँ—एक फेमिनिन जेन्डर—लेकिन वह पेशेन्ट नहीं थी…(हँसकर) अरे सोच में क्यों पड़ गई ? अच्छा देख, अब अगर तू इस बात को कन्फर्म करना चाहती है तो जब डॉक्टर सेन्ट को शीशी वापस करने दूकानदार के पास जाये, तू उसके साथ चली जा—डॉक्टर की ही खुशबू उड़ जायेगी …लेकिन चेतता नर सदा सुखी…संभाल लेना। अच्छा, अब मैं भी जरा निपट-निपटा लूं। चाय अन्दर ही दे जाना।

(चाचा अन्दर आते हैं। कालबेल बजती है। वंदना दरवाजा खोलती है। डॉ० कौशिक अन्दर प्रवेश करता है, आयु ३२ वर्ष।)

कौशिक : भाभी जी नमस्ते।

वंदना : नमस्ते—आइये कौशिक भाई।

कौशिक : आप बड़ौदा से कब लौटीं ?

वंदना : बस अभी, चले ही आ रहे हैं। तुम सवेरे-सवेरे कहाँ से चले आ रहे हो ?

कौशिक : हमारे भाई साहब का एक बहुत जरूरी काम पड़ा हुआ है।

वंदना : कोई पेशेन्ट सीरियस है ?

कौशिक : नहीं भाभी, कुछ हद तक तो मैं ही बीमार हूं।

वंदना : अच्छा, मैं उन्हें भेजती हूँ।

(वंदना जाती है, रूपेश आता है)

कौशिक : गुडमार्निंग माई डीयर डाक !

रूपेश : गुडमार्निंग कौशिक, कैसे आये ?

कौशिक : बात कुछ अटपटी है।

रूपेश : क्यों ? किसी लफड़े में फँस गये ?

कौशिक : नहीं। बिल्कुल नहीं। बात दरअसल यह है कि मेरी एक गर्ल-फ्रेंड है।···

रूपेश : वह तो सबकी होती है भाई। इसमें···इसमें शर्माने की क्या बात है ?

कौशिक : मुझे उसके साथ शादी करनी है। —लेकिन मेरी अम्मा राजी नहीं हो रहीं।

रूपेश : खास वजह ?

कौशिक : वह नर्स है—इसलिए।

रूपेश : क्यों नर्स और डॉक्टर की शादी नहीं हो सकती ?

कौशिक : क्यों नहीं हो सकती ! लेकिन अम्मा कहती है कि तू नर्स से शादी करेगा, फिर वह नर्स नाइट-ड्यूटी करेगी—यह उन्हें पसन्द नहीं।

रूपेश : हाँ, नर्स की नौकरी जारी रखेंगी तो नाइट-ड्यूटी तो करनी ही पड़ेगी।

कौशिक : अम्मा कहती है नर्स जब नाइट-ड्यूटी पर जायेगी तो फिर गृहस्थाश्रम कहाँ रहा।

रूपेश : अपनी अम्मा से कहना कि मिलों में, कारखानों में हजारों मजदूर रात की पाली करते हैं लेकिन फिर भी उनके घर में सात-सात पालने झूलते हैं।

कौशिक : नहीं। नहीं, मैं वो रात की पाली की बात नहीं करता। लेकिन नर्स नाइट-ड्यूटी पर जायेगी तो नेचुरली— दिन में सो जायेगी। —घर का काम कब करेगी।

रूपेश : तो सारा दिन ही सोती रहेगी।

कौशिक : एक्जेक्टली ! यही बात अम्मा के मन में बैठती है—तुम मेरे घर चलो और इन्टरमीजियरी का रोल निभा दो।

रूपेश : मैं चलूं ? लेकिन मेरे कहने से क्या मान जायेगी ?

कौशिक : जरूर। तुम्हें तो वह देव-पुरुष मानती हैं। मुझसे अक्सर कहती हैं कि सुखी दाम्पत्य का सुखी जोड़ा देखना हो तो रूपेश और वन्दना की जोड़ी देखो। ऐसे देव-पुरुष हमेशा सच्ची सलाह देंगे।

रूपेश : ठीक है। मैं आ जाऊँगा। बट टेल मी, यह नर्स क्या तुम्हारे हास्पिटल की ही है ?

कौशिक : हाँ - वो अनीटा।

रूपेश : ओह, वेरी गुड सेलेक्शन !

कौशिक : थैंक्यू। अब मैं तुम्हें दूसरे ताजे समाचार दूँ—डीन की खाली जगह के लिए सडेनली डॉ० ध्रुव ने अपना इरादा बनाया है, जानते हो क्यों ? जुलाई में शिकागो में वर्ल्ड साइक्याट्रिस्ट कान्फ्रेन्स है। डीन की जगह मिल जायेगी तो आफिशियली शिकागो जा सकेंगे—और नाम मिलेगा।

रूपेश : ओह—आई सी।

कौशिक : पर बड़े भाई, तुम फिक्र न करो। बस मेरी बिलवेड से मिलवा दो। मैं कमेटी के मेम्बर्स की ऐसी वायर-पुलिंग कर दूँगा कि तुम्हारा ही सेलेक्शन हो।

रूपेश : थैंक्स।

(वंदना ट्रे में दो कप चाय लाती है।)

रूपेश : वंदना, एक खुशखबरी है। डॉक्टर कौशिक भी अपनी बिरादरी में शामिल हो रहे हैं।

वंदना : अपनी बिरादरी में ? क्या मतलब ?

रूपेश : अरे भाई, एक से दो होने जा रहा है।

वंदना : कांग्रेच्युलेशन्स।

रूपेश : इसके कप में तीन चम्मच डालना।

कौशिक : नहीं भाभी, बस एक ही काफी होगी।

रूपेश : क्या एक ही काफी होगी ?

कौशिक : सुगर।

(तीनों हँसते हैं।)

अन्धकार। फिर प्रकाश होता है। चाचा बाहर जाने के कपड़े पहनकर आते हैं। रात्रि का समय है।

चाचा : अरे बहूरानो, जल्दी तैयार हो जाना। प्लेन नौ बजे जाता है (फोन की घंटी बजती है—चाचा रिसीव करते हैं) हलो—हलो, अरे भाई जो हो

बोलो न। इतनी रात गये टिरीन-टिरीन कर रखी है और वहाँ से माइम में बात कर रहे हो, मैं क्या समझूँ ?···हलो—ऐसी की तैसी, जहन्नुम में जाओ। (झुंझलाकर रिसीवर रखते हैं।) अरे वहू, साथ में गरम शाल जरूर ले लेना। (फिर फोन की घंटी बजती है। चाचा थोड़ी देर रुककर रिसीवर उठाते हैं—लेकिन पहले नहीं बोलते हैं—कुछ देर में बोलते हैं) अरे भाई कौन हो ? आदमी हो कि भूत ? यह फोन पर मौन व्रत क्यों धारण कर रखा है ? ···अरे मियाँ फोन में टेलीविजन होता तो मैं चाचा करसनदास तुम्हें मजाक करने का वो मजा चखाता कि याद करते। हमें एयरोड्रम जाना है और तुम्हें चुहँल सूझी है ! —यू ब्लडी डैमफूल ! (रिसीवर रखता है। वंदना साड़ी बदलकर आती है।)

वंदना : चाचाजी, किसका फोन था ?

चाचा : वही मौनव्रतधारी। अरे कम्बख्त ने रात भर टिरीन-टिरीन—न जाने कितनी बार रिंग कर डाला—लेकिन कसम है भगवान की, जो एक हरफ भी मुँह से बका हो !

वंदना : पर अभी तक डॉक्टर क्यों नहीं आये ?

चाचा : डॉक्टरों का यही तो रोना है। फैमिली-लाइफ जैसी कोई लाइफ होती है—और लाइफ में एक वाइफ होने पर फैमिली-लाइफ कैसे भोगी जाती है—यह लोग कुछ समझते ही नहीं हैं—ये और इनके मरीज—बस यही है इनकी फैमिली !

वंदना : कोई पेशेन्ट सीरियस हो सकता है।

चाचा : अरे पेशेन्ट सीरियस हो तो अपने घर के सीरियस कामों का ख्याल रखते हुए खुद भी तो सीरियस हो जाना चाहिए—अरे, मरीज को दूसरे डॉक्टर को भी सौंपा जा सकता है।

वंदना : नहीं चाचा जी, अपने मरीज दूसरे डॉक्टरों को नहीं सौंपे जाते।

चाचा : सो तो ठीक है—लेकिन वाज वक्त तो दूसरों के मर्ज का इलाज करते-करते खुद डॉक्टर भी मरीज बन जाते हैं··· (वंदना हँसती है) अरे, तू हँस रही है ?···पर देख डॉक्टर को आने दे। मैं यह तो कहूँगा ही कि तू तो प्रिया लाया था वह खत्म हो गयी है—(रूपेश का प्रवेश) लो आ गये मानसशास्त्री ! कहो वरखुरदार, देर कैसे हो गई ? हमको एयरोड्रम पहुँचना है न ?

रूपेश : तो आप जाइये—मैं नहीं चल सकूंगा।

वंदना : क्यों ?

रूपेश : डॉ० ध्रुव मुझसे मिलने यहाँ आने वाले हैं।

चाचा : अरे वाह ! डॉ० ध्रुव को भी आज रात ही आने का वक्त मिला ? सगी वहन का लड़का शादी के वाद जोड़े के साथ अमरीका जा रहा है और तुम उसे सी-ऑफ करने एयरोड्रम भी नहीं जाओगे ? वेचारी वहन क्य सोचेगी ? —उसे कितना बुरा लगेगा ?

रूपेश : चाचाजी, अब आज के जमाने में फॉरेन जाना कोई बड़ा भारी बाघ मारने जैसा तो है नहीं। अब तो जैसे आदमी नागपुर जाता है वैसे ही अमरीका जाता है।

चाचा : लेकिन वरखुरदार, नागपुर जाने वाले को छोड़ने के लिए भी दोस्त-अहबाब ५० पैसे खर्च करके, प्लेटफार्म का टिकट खरीदकर छोड़ने जाते हैं कि नहीं।

रूपेश : अगर अर्जेन्ट काम होता है तो नहीं।

वंदना : अच्छा ठीक है। कार की चाभी दीजिये। मैं गाड़ी ले जाऊंगी। (डॉक्टर चाभी देता है) चलिये चाचाजी।

(चाचा जी और वंदना जाते हैं। रूपेश फोन करने के के लिए उठता है—तभी दरवाजे की कालबेल बजती है)

रूपेश : इस वक्त भला कौन आ टपका ?

(रूपेश दरवाजा खोलता है—सोनाली का प्रवेश।)

सोनाली : हाय।

रूपेश : सोनाली ?

सोनाली : आज कितने अर्से वाद मौका मिला है !

रूपेश : किस वात का ?

सोनाली : किस वात का ! (हँसती है) क्यों डॉक्टर क्या इरादा है ?

रूपेश : बी सीरियस— कैसे आना हुआ ?

सोनाली : तुम्हारे साथ प्राइवेट वातें करने। वह तुम्हारी दुम तो घड़ी भर के लिये भी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ती। कबूतरी की तरह गुटुरगूं-गुटुरगूं करती रहती है। मैंने कितनी ही वार फोन ट्राई किया, लेकिन वह तुम्हारी

कबूतरी और तुम्हारे कौए जैसे चाचा घर में मौजूद ! (हँसती है) एक बात बताओ—यह जो बुड्ढा अभी-अभी बाहर गया है, क्या यही है तुम्हारा खूंसट चाचा ?

रूपेश : हाँ।

सोनाली : और उसके साथ जो औरत थी ?—योर वाइफ !

रूपेश उत्तर नहीं देता। बड़ी अदा से पर्स को टेबुल पर फेंकती हुई सोफे पर बैठ जाती है।

सोनाली : बैडलक ! (रूपेश कुछ क्रोधित भाव से उसकी ओर देखता है। सोनाली अनदेखा करके) बेहद खूबसूरत तो नहीं हैं—फिर भी चलेगी ! वस सो-सी है।—लेकिन तुम्हारे वो चाचाजी रंगीन तबियत के आदमी लगते हैं। इस बुढ़ापे में भी चाँदनी रातें का मजा लूटने अटैची साथ लटकाये—क्या सैर करने गये हैं ?

रूपेश : (तीखे स्वर में) माईन्ड योर टंग सोनाली ? मैं इस तरह की बकवास का आदी नहीं हूँ।

सोनाली : अच्छा ! (रूपेश की ओर खिसकते हुए) फिर किस चीज के आदी हो—नहीं-नहीं, मेरा मतलब है, सैर करने नहीं गये हैं तो फिर इस समय जाने का क्या तुक है !

रूपेश : (शुष्क स्वर में) एयरोड्रोम—मेरे भांजे को सी-ऑफ करने। वह आज रात की फ्लाइट से अमेरिका जा रहा है।

सोनाली : (मुस्कराकर और करीब होते हुए) आई सी ! —मतलब यह, कि मौका अच्छा है··· लेकिन माई डियर डॉक्टर, तुम नहीं गये ?

सोनाली अपनी बाहों का हार रूपेश की गर्दन में डाल कर लिपटने का प्रयास करती है। रूपेश झटककर खड़ा हो जाता है।

रूपेश : बिहेव योरसेल्फ सोनाली ! हद मत तोड़ो।

सोनाली : डियर, अंग्रेजी में कहावत है, वन मस्ट मेक द अपार्च्युनिटीज—और तुम हाथ आया मौका खो रहे हो।

रूपेश : (झुंझलाकर तीखे स्वर में) बट आई से शटअप !

सोनाली : (हँसकर) फार ह्वाट ?

रूपेश : (बात बदलते हुए अपेक्षाकृत शान्त स्वर में) इस समय तुम यहाँ क्यों आई हो ?

सोनाली : सिर्फ यह जानने कि तुम डीन हुए या नहीं।

रूपेश : (सहसा जैसे भड़क उठता है) तुमसे मतलब ? —चली जाओ यहाँ से !

सोनाली : (मुस्कराते हुए) चली जाऊँगी, भड़क क्यों रहे हो—शादी करके लाये होते तो बात और थी—वैसे भी, कहो तो रुक सकती हूँ···नहीं-नहीं, गुस्सा नहीं।—तुम कहते हो तो चली जाऊँगी, लेकिन तुम्हें डीन की कुर्सी पर बिठाकर।···

रूपेश : मुझे नहीं चाहिये तुम्हारी मदद ! भगवान के लिये मुझ पर रहम करो और दफा हो जाओ यहाँ से ! फिर मुझसे इस तरह रात में मिलने की कोशिश मत करना।

सोनाली : क्यों ?

रूपेश : क्योंकि रात होते ही तुम्हारा मूड आउट ऑफ ट्यून हो जाता है।

सोनाली : (कटाक्ष करती हुई) अच्छा जी ! इस वक्त मैं तुम्हें आउट ऑफ ट्यून लग रही हूँ—क्यों ?

रूपेश : (तिरस्कार भरे स्वर में) हाँ। इस वक्त तुम्हारी आँखों में कामुकता झलकने लगती है, हरकतें सीमा पार करने लगती हैं, बातें बहकने लगती हैं—और दिमाग में विकार भर जाता है।

सोनाली का चेहरा अपमान से दहकने लगता है।

सोनाली : (तीखे स्वर में) बस ? इसी बल पर तुम मेरा इलाज करना चाहते थे ? तुम डॉक्टर हो या···तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि जिस आदमी का दिमाग ठीक न हो, उसका इलाज तभी किया जाता है, जब उस पर दौरा पड़े ?

रूपेश : (चिढ़कर) मैं बेहतर जानता हूँ कि किसका इलाज कब और कैसे करना चाहिये, इसलिये उपदेश मत दो।

सोनाली : (शान्त स्वर में) ठीक है, नहीं देती। लेकिन मेरा ख्याल है, तुम दूसरों का इलाज करने से पहले अपना इलाज कराओ। तुम्हें बहुत जल्द गुस्सा आ जाता है। बात-बात में भड़क उठते हो।

रूपेश : तुम्हें क्या ! मेरी चिन्ता छोड़ो—और जाओ यहाँ से !

सोनाली : डरते हो ?—हां, ठीक भी है। अगर कहीं तुम्हारी बीवी ने इस वक्त यहां तुम्हें मेरे साथ अकेले देख लिया तो वह तुम्हारी धूल जो झाड़ना शुरू कर देगी !

रूपेश : (व्यंग्य से तिलमिलाकर) आई से—गेट आउट !

सोनाली : च्-च् ! कितना डरते हो अपनी कबूतरी जैसी घरवाली से ! पिटी !

रूपेश : (सहसा स्वर बदल जाता है) हां, मैं तो डरता हूं। लेकिन तुम ?

सोनाली : मैं किसी से नहीं डरती।

रूपेश : गलत। तुम डरती हो—खुद से !

सोनाली : (लापरवाही से कन्धे झटककर) सवाल ही नहीं पैदा होता।

रूपेश : (समझाने के भाव में) सोनाली. समझने की कोशिश करो। अपने आप को धोखा मत दो। मैं डॉक्टर हूं। मरीज का इलाज करने के कई तरीके होतें हैं जिनका इस्तेमाल मरीज की कैफियत जानकर किया जाता है—और तुम बीमार हो, अशान्त हो, इससे इन्कार नहीं कर सकतीं। (सोनाली के चेहरे पर भावों का उतार-चढ़ाव देखते हुए) तुम्हारा सिर्फ एक इलाज है—और वो यह; कि तुम्हारे दिल में जो भी है, खोलकर रख दो। छिपाने से कोई लाभ नहीं—मैं यह तो नहीं जानता कि तुम्हारे दिल में क्या है; पर यह निश्चित है कि भीतर एक ज्वालामुखी धधक रहा है। उसका लावा जब उबलने लगता है तो तुम अशान्त हो उठती हो, बेचैन होकर विकार से भर जाती हो, दिमाग हैं आग-सी धधक उठती है। (पल भर के लिए रुककर सोनाली के चेहरे पर प्रतिक्रिया को देखता है) मैं ठीक कह रहा हूं न? (सोनाली खामोश रहती है, लेकिन चेहरे के रंग तेजी से बदलते रहते हैं। सहसा चेहरा तमतमाने लगता है। आंखों में क्रोध, नफरत और विवशता के भाव पैदा होते हैं।) एक डॉक्टर होने के नाते, दोस्त या शुभ-चिन्तक होने के नाते क्या मैं जान सकता हूं—वह कौन सा घाव है जो तुम्हारे कलेजे में नासूर बनकर सड़ रहा है ? वह दर्द किसने दिया जो रात होते ही तुम्हे बेचैन कर देता है बेकाबू कर देता है ? बोलो सोनाली—कौन है वह ? ···क्या नाम है उसका ? —बोलो !

सोनाली : (सहसा नियन्त्रण खोकर चीख उठती है) नहीं ! नहीं बताऊंगी—डॉक्टर, तुम आदमी नहीं, राक्षस हो !···तुम क्या जानों घाव क्या होता

है ? दर्द क्या होता है ! टीस किसे कहते हैं ? जलन किसका नाम है ? ···कौन हो तुम मेरे ? —क्यों कुरेदा तुमने मेरा घाव ? क्या बिगाड़ा था तुम्हारा ? कुसूर क्या था—सिर्फ यही न, कि रेगिस्तानी जमीन की तरह प्यासी जिन्दगी को तुम्हारी बदौलत कुछ ओस की बूंदें चाटने को मिल जाती थीं ? मैं आकर तुम्हें परेशान करने लगी थी ?··· (आँखों का हिंसक भाव उत्तेजनावश कातरता में बदल जाता है, उफ डॉक्टर, क्या कर दिया तुमने ? सोयी हुयी नागिन को छेड़ने से पहले सोचा तो होता।

रूपेश : क्या नाम था उसका ?

सोनाली : मत पूछो उस शैतान का नाम—वह नरपिशाच था—कमीना···

चीखने के कारण खाँसने लगती है।

रूपेश : (सान्त्वना भरे स्वर में टालते हुए) अच्छा-अच्छा जाने दो। आयम सॉरी—रियली सॉरी ! मैं कॉफी बना लाता हूँ—पियोगी ?

सोनाली : आप मेरे लिये जहमत मत उठायें जरूरत होगी तो मैं खुद बनाकर पी लूंगी·।

रूपेश : और अगर मैं ही बना लाऊं तो कोई हर्ज है ?

सोनाली : वहलाने की कोशिश मत करो डॉक्टर ! सोनाली वही करती है जो एक बार मुँह से निकलजाता है।

रूपेश : ओ० के०—ओ० के० ! —अच्छा उस दिन तो 'प्रिया' की शीशी लाई थीं, आज क्या लाई हो—देखूं तो !

बढ़कर टेबुल से पर्स उठाकर खेलने लगता है।

सोनाली : (रोकते हुए) नहीं-नहीं उसे मत खोलो···मत खोलो उसे !

लेकिन रूपेश एक नहीं सुनता। पर्स खोलकर सोनाली के झपटने से पूर्व ही सिग्रेट का एक पैकेट और एक शीशी निकाल लेता है। शीशी में कुछ टैब्लेट्स हैं। सोनाली स्तब्ध रह जाती है।

रूपेश : यह···यह सिग्रेट कैसी है ? (सूंघता है)—चरस ? तुम चरस पीती हो ? —और···और यह एल० एस० डी०—ओह ! अब समझा।

आवेश से काँपती सोनाली पहले तो खा जाने वाले भाव में एकटक घूरती रहती है फिर बिल्ली की तरह झपट कर पर्स छीनने का प्रयास करती है।

सोनाली : मैं पूछती हूँ, तुमने मेरा पर्स क्यों खोला ? किससे पूछकर खोला ? (सोनाली को झपटता देखकर रूपेश पर्स को सोफे पर फेंक देता है)— कौन हो, मेरा पर्स छूने वाले ? मैं चरस लूँ या जहर—तुमसे मतलब ?

रूपेश : (शान्त स्वर में) हाँ। मतलब है। एक डॉक्टर होने के नाते मुझे मतलब है। (कहते हुए रूपेश सिग्रेट पैकेट को तोड़-मरोड़कर बाहर फेंक देता है।)

सोनाली : यू ब्लर्डी वास्टर्ड ! ···तुमने मेरी सिग्रेट क्यों फेंक दी ?—बोलो ! स्पीक आउट रास्कल झपटकर रूपेश को बाँहों से पकड़कर झिझोड़ डालती है।) आई···आई···

रूपेश : डोन्ट वी सिली सोनाली—डोन्ट क्राई ! (कालवेल की मधुर आवाज सुनकर) बाहर कोई है—तुम इस समय यहाँ से चली जाओ। हम बाद में भी बात कर सकते हैं—पर अभी तुम जाओ। उधर···उस स्विंग डोर से। यह पीछे का रास्ता है—घूर क्या रही हो ! सुना नहीं तुमने ?— नाऊ गो अवे ! —मूव !

कहकर लगभग ढकेलते हुए वह सोनाली को स्विंग-डोर के पीछे छोड़ देता है और बाहरी दरवाजे की तरफ बढ़ता है। स्विंग-डोर का दरवाजा स्विंग करता रहता है। ···रूपेश बाहरी दरवाजा खोलता है और कौशिक के साथ वापस लौटता है। दोनों की बातचीत चल रही है।

रूपेश : इट इज ए सरप्राइज—अनएक्सपेक्टेड।

कौशिक : रियली—इज इज ! वट आय हैव ऐन इम्पॉर्टेन्ट इन्फार्मेशन ऐण्ड द न्यूज फार यू। फर्स्ट आफ आल—डॉ० ध्रुव यहाँ आ रहे हैं न ?

रूपेश : कन्सल्टिंग रूम में फोन करके उन्होंने खुद यहाँ आकर मिलने को कहा था—मेरे लिये तो अजीब बात है।

कौशिक : इसीलिए मैं उनसे पहले आया हूँ ताकि कुछ जानकारी तुम्हें पहले से रहे। —तुम्हें यह इन्फार्मेशन तो होगी ही कि शिकागो में होने वाली वर्ल्ड कान्फ्रेंस को इन्डियन डेलीगेट ही प्रिसाइड करेगा—इज इट ? नाऊ यू कैन ईजिली इमैजिन, ह्वाट ए ऑनर इट इज टु बिकम द प्रेसीडेण्ट ऑव ए वर्ल्ड-कान्फ्रेंस टु बी हेल्ड ऐट शिकागो !

रूपेश : ओह यस। आफकोर्स!

कौशिक : सेकेण्डली—डॉ० ध्रुव इस पोस्ट के दावेदार हैं और हर मुमकिन कोशिश कर रहे हैं कि यह ऑनर उन्हीं को मिले। इसके लिये उनकी एक सीक्रेट मीटिंग सेठ गोपालदास से भी हो चुकी है। सुना है, वह सेठ को हास्पिटल के लिए पचास हजार का डोनेशन देने का प्रॉमिस भी कर चुके हैं—बशर्ते शिकागो के लिये उन्हें चुना और भेजा जाये।

स्विंग-डोर के पीछे खड़ी सोनाली सब कुछ सुन रही है।

रूपेश : पचास हजार! ···यानी कि पचास हजार की रकम के लिए चचा से मोर्चा लेना ही पड़ेगा···

कौशिक : लेकिन तुम डॉ० ध्रुव के सामने हथियार मत डाल देना। वह लोमड़ी की तरह चालाक और मक्कार है—कोई दाँव छोड़ेगा नहीं!

रूपेश : लेट हिम कम। आज वह भी जान जायेगा कि रूपेश कच्ची गोलियाँ नहीं खेले है।

कालबेल की आवाज। कौशिक बाहरी दरवाजे की ओर जाता है और डॉ० ध्रुव को साथ लेकर वापस आता है—अधेड़ उम्र का अनुभवी व्यक्ति। रूपेश इस समय अन्दर चला गया है। डॉ० ध्रुव को सोफे पर बैठाकर कौशिक सिग्रेटकेस निकालकर बढ़ाता है :

कौशिक : वेल डॉक्टर—सिग्रेट?

ध्रुव : ब्यूटीफुल—

कौशिक : जर्मन मेड! (ध्रुव सिग्रेट निकालकर होंठों पर लगाता है।) डॉक्टर रूपेश इज जस्ट कमिंग—ही इज इन बाथरूम!

ध्रुव : ओ० के०! वट इफ यू प्लीज डोन्ट माइन्ड, आई नेवर एक्सपेक्टेड टु सी यू हियर प्लीज गिवअस योर कम्पनी ऐण्ड ओब्लाइज!

कौशिक : (लाइटर जलाकर डॉ० ध्रुव की ओर बढ़ाते हुए) थैंक्यू फार द इन्विटेशन बट आयम रियली सॉरी नॉट टु अकम्पनी यू—मै तो जा ही रहा था कि आपने घंटी बजा दी—(फिर अपनी सिग्रेट जलाकर गहरा धुआँ छोड़ते हुए)—दरअसल मेरी फिआँसे मेरा वेट कर रही होगी।

ध्रुव : (मुस्कराकर) तब तो तुम्हें रोककर यह बूढ़ा डॉक्टर दो जवान दिलों के साथ अन्याय कर रहा है—ऐम आइ राइट डॉक्टर?

इसी समय कमरे में सीढ़ियों से उतरते हुए रूपेश का प्रवेश।

रूपेश : आफकोर्स डॉक्टर ध्रुव—गुड इवनिंग (बढ़कर हाथ मिलाते हुए) प्लीज बैठिये—

ध्रुव : (रूपेश से हाथ मिलाकर कौशिक की ओर हाथ बढ़ाते हुए) ओ० के० डॉक्टर, सी, यू !

औपचारिकता के साथ कौशिक मुस्कुराता हुआ बाहरी दरवाजे की ओर चल देता है। डॉ० ध्रुव और रूपेश सोफे पर बैठ जाते हैं।

ध्रुव : (सहज मुस्कान के साथ बैठते हुए अत्यन्त सहज स्वर में) डॉक्टर कौशिक इज ए वेरी इन्ट्रेस्टिंग ऐण्ड प्रॉमिसिंग यंग मैन—ह्वाट डू यू थिंक डॉक्टर मेहता ?

रूपेश : राइट यू आर।

ध्रुव : बाई द वे डॉक्टर मेहता, तुम जानते हो उसकी फिआँसे को !

रूपेश : अपने हास्पिटल की नर्स—अनीटा।

ध्रुव : आई थाट सो—अक्सर ड्यूटी ऑफ होने पर दोनों साथ घूमते दिख जाते हैं—गॉड ब्लेस देम ऐण्ड द एण्डलेस हेपीनेस टु देयर फ्यूचर लाइफ ! (रूपेश को व्यंग्य की गन्ध आई, लेकिन ध्रुव के चेहरे पर ऐसा कोई भाव नहीं था, वह अत्यन्त सामान्य और सहज ढंग से कहता रहा) विल यू प्लीज कन्वे माई ब्लेसिंग्स ऐन्ड गुड विशेज टु द यंग लवर्स ? — वेल डॉक्टर, मैं बूढ़ा हो रहा हूं, और बुढ़ापा अनुभवों की तिजोरी होता है—यू कैन ईजिली फाइण्ड आउट द फैक्ट इन हिज आईज, ही डिस्लाइक दिस ओल्ड मैन !

कहता हुआ डॉ० ध्रुव खोखली हँसी के साथ हँस पड़ता है। रूपेश स्तब्ध रह जाता है।

ध्रुव : (उसी स्वर में) बिलीव मी डॉक्टर मेहता, मुझे बेहद खुशी होगी अगर दोनों एक हो जायें।

रूपेश : (डॉ० ध्रुव के अनपेक्षित व्यवहार से उत्पन्न आश्चर्य को दबाते हुए) आपका आशीर्वाद बेकार नहीं जायेगा डॉक्टर। अब बहुत जल्द दोनों का

विवाह हो जायेगा—पहले ही हो जाता, लेकिन उस समय इसकी मदर नहीं तैयार थीं। अब वह मान गई हैं।

ध्रुव : (प्रसन्नता पूर्वक) माइ हार्टी कांग्रेचुलेशन्स टु द 'वुड वी न्यू कपल'! कहा भी गया है—आल इज वेल दैट एण्ड्स वेल। ईश्वर उन्हें दुनिया भर की खुशियाँ दे, यही मेरी दुआ और आशीर्वाद है कौशिक के लिये।

रूपेश : (स्तम्भित-सा) डॉक्टर ध्रुव…आपके बारे में लोगों को काफी गलत फहमिया हैं…नारियल की तरह—वाहर से कुछ, भीतर से कुछ—

ध्रुव : नहीं मेहता, मैं कुछ भी नही हूँ—सिर्फ आदमी हूँ। इसके अलावा कुछ भी नहीं—और आदमी में बुराइयां ही ज्यादा होती है, अदरवाइज वह महान हो जाता है, पुजने लगता है। विश्वास करो मैं एक साधारण-सा आदमी हूँ—बुराइयों से भरा हाड़-मांस का पुतला।… (रूपेश के चेहरे से जाहिर होता है कि वह प्रभावित होता जा रहा है) इसीलिए तो तुम्हारे पास आया हूँ ताकि हम दोनों के बीच जो गलतफहमियों की काली काई अनजाने ही जम गई है उसे साफ करके जल को निर्मल, स्वच्छ किया जा सके। मे आई सीक फार योर कोआपरेशन?

सहसा होने वाले डॉ० ध्रुव के स्वर में परिवर्तन से रूपेश चौंकता तो है, पर उसे बड़ी कुशलता से छिपा जाता है।)

रूपेश : आफकोर्स डॉक्टर, वी मे होप सो।

ध्रुव : पहेलियाँ बुझाना तो मेरी आदत नहीं है, फिर भी जानना चाहूँगा डॉक्टर—क्या तुम जानते हो, मैं यहाँ क्यों आया हूँ जबकि हम लोग हॉस्पिटल या कहीं और भी बात कर सकते थे!

रूपेश : मकसद तो नहीं जानता, पर इतना जरूर जानता हूँ कि आप एक बेहद व्यस्त रहने वाले लोगों में से हैं—नहीं-नहीं. व्यंग्य नहीं कर रहा, यह हकीकत है। वाकई आपका एक-एक मिनट कीमती होता है—इसलिये आप बिना किसी खाश मकसद के, यहाँ आये हैं, इसे मैं तो क्या कोई भी मानने को तैयार नहीं होगा।

ध्रुव : दैट्स राइट डॉक्टर। मैं समझता हूँ हमें उसी खास मकसद पर बात करनी चाहिये। (रूपेश की मौन स्वीकृति पाकर) मैं समझता हूँ, हम

दोनों के बीच कहीं कोई दरार पड़ गई है, कुछ लोगों ने हमारे बीच गलतफहमियों की एक अटूट दीवार खड़ी कर दी है, हमें आपस में ही लड़वा कर खुद तमाशाई बनना चाहते हैं। हालात बड़े अजीब हो गये हैं डॉक्टर मेहता। यह तो निश्चित है कि दो की लड़ाई में फैसला किसी एक के हक में होगा—और तब दोनों के बीच शत्रुता वाली स्थिति पैदा हो जायेगी। हम दोनों ही इस बोझ को उठाये घूमते रहेंगे।

तभी डॉ० ध्रुव के पीछे, स्विंग-डोर से सोनाली बाहर निकलती है—हाथ में ट्रे. और ट्रे में शरबत के दो गिलास रखे हैं। नजर पड़ते ही रूपेश को संकेत से बताती है, पर्स भूल गई थी, लेने आई है। रूपेश आश्वस्त तो होता है, पर सामान्य नहीं। ध्रुव भी सोनाली की संकेत-भाषा को, पीठ पीछे सोनाली की स्थिति के कारण देख नहीं पाता। चेहरे पर काफी लम्बा घूँघट डालकर वह ट्रे को टेबुल पर रख देती है। ध्रुव निर्विकार रहता है—सहसा खामोश हो जाता है। सोनाली पर्स उठाकर शालीनता से उसी स्विंग-डोर के पीछे चली जाती है। रूपेश सामान्य होता है, परन्तु ध्रुव के चेहरे पर गहरी गम्भीरता दिख रही है।

पेश : (कुछ पल डॉ० ध्रुव के खामोश, अन्तर्द्वन्द्व में डूबे चेहरे को देखते हुए) हैव ए ड्रिंक डॉक्टर।

व : ओह यस—(गिलास उठाते हुए) थैंक्यू डॉक्टर। (फिर खामोशी—कुछ क्षण बाद जैसे विस्फोट होता है) डॉक्टर मेहता, मेरा ख्याल है, यह सच्चाई तुमसे छिपी नहीं है। तुम अच्छी तरह जानते हो कि इस हॉस्पिटल में काम करते मेरी उम्र बीत गई है—बरसों बीत गये, यहाँ मरीजों की सेवा करते। मैंने रात हो या दिन—काम से कभी मुँह नहीं मोड़ा—कड़ी मेहनत, ईश्वर में आस्था, हाथों पर विश्वास करके मैंने नामुमकिन लगने वाले मुश्किल-से मुश्किल-आंप्रेशन किये और बाई द ग्रेस आफ गॉड मैं उन मरीजों की जान बचा सका—इसी मेहनत और सेवा के बल पर मेडिकल वर्ल्ड में मैं कुछ नाम पैदा कर सका, अपने लिये जगह बना

सका।...यह सब कहने का मकसद यह है कि हास्पिटल में डीन की कुर्सी पर बैठने का हकदार मैं हूँ—न सिर्फ काम और नाम की वजह से, बल्कि सीनियरिटी के लिहाज से भी मेरा ही हक बनता है।

रूपेश : ऑफकोर्स डॉक्टर, यह हक आपको ही मिलना चाहिये। लेकिन एक बात भूल रहे हैं—और वह यह, कि हम लोग डेमोक्रेटिक एज में रह रहे हैं जहाँ मान-सम्मान, काबलियत और सीनियरिटी वगैरह की कोई कद्र नहीं करता। हर जगह यंग ब्लड की डिमांड है।

ध्रुव : ठीक है, डिमांड होनी चाहिये। लेकिन बरसों का अनुभव, ज्ञान, तपस्या—क्या यह सब बेकार है ?

रूपेश : एक्सक्यूज मी डॉक्टर ध्रुव—हम हर पल आगे बढ़ते जा रहे हैं। हर गुजरा हुआ दिन साइंस की दुनिया में एक नया अध्याय जोड़ देता है—रोज मेडिकल साइंस एक कक्षा आगे बढ़ जाती है—जाहिर है, कल का अनुभव आज की रिसर्च के आगे अर्थहीन साबित हो जाता है, तब बीते दिनों का अनुभव, बीते वर्ष का ज्ञान कहाँ स्टैण्ड करेगा ? इन माई व्यू, वी मस्ट गो एलांग विद द टाइम, विद द एवर चेंजिग न्यू वर्ल्ड एण्ड ऐब्सोल्यूट्ली न्यू थियोरीज। ऐण्ड सो आयम कान्फीडेन्ट टु गेट ऐण्ड होल्ड द पोस्ट।

ध्रुव : (रहस्य भरे स्वर में) ह्वाई नाट ! लेकिन बिना कमेटी का फेवर गेन किये हुए ? —कमेटी डॉक्टर ध्रुव को फेवर करेगी। वह मेरे फेवर में है।

रूपेश : अच्छा ! लेकिन अभी तक तो नहीं थी—अचानक कैसे हो गयी ?

स्विंग-डोर के पीछे खड़ी सोनाली सारी वार्ता सुन रही है।

ध्रुव : (व्यंग्य पहचानकर तीखे स्वर में ह्वाट डू यू मीन ? तुम कहना क्या चाहते हो ?

रूपेश : मैं तो कुछ भी कहना नहीं चाहता—कह तो आप ही रहे हैं। अच्छा, एक बात बताइये—अचानक आपको डीन बनने की कैसे सूझी ?

ध्रुव : (चिढ़कर) क्यों ? —इट्स नेचुरल ! वजह है, बरसों की सेवा और सीनियारिटी।

रूपेश : नहीं डॉक्टर, आप गलत कह रहे हैं। वजह वो नहीं है जो आप कह रहे

हैं। वजह है—शिकागो की वर्ल्ड कान्फ्रेंस और उस कान्फ्रेंस को प्रेसीडेन्ट की हैसियत से प्रेसाइड करना।

ध्रुव : नाट द लीस्ट डाक्टर मेहता, दीज आर सिम्पली इन्स्ट्रूमेन्ट्स—वरना शिकागो की आन्फ्रेंस को अटेन्ड करने के लिये डीन होना कोई शर्त नहीं हैं। वहाँ तो नाम, काम और प्रतिष्ठा के बल पर भी सेलेक्ट होकर पहुँचा जा सकता है।

रूपेश : तो फिर सेंठ गोपालदास को पचास हजार का डोनेशन देने का वचन किस खुशी में दिया गया है ?

ध्रुव : वह तो⋯वह तो⋯(गड़बड़ा जाता है, फिर रूपेश की मुस्कान पर नजर पड़ते ही बिगड़ उठता है) तुम क्या समझते हो, यह रिश्वत है ? मैं रिश्वत दे रहा हूँ ? नहीं-नहीं, तुमने गलत सुना है। हकीकत तो यह है कि कार्डियक यूनिट में साधन कम हैं जिसके लिए⋯

रूपेश : (बात काटकर) तो फिर आप इस पोस्ट के लिये क्यों परेशान हैं ? लीव इट।

ध्रुव : सिर्फ इस लिए कि मैं अपने नाम के आगे 'डीन' लगा देखना चाहता हूँ। (खुशामदी स्वर में लगभग गिड़गिड़ाते हुए) जस्ट कोआपरेट मी डॉक्टर मेहता। आई प्रामिस यू द वर्ड्स—ठीक दो साल बाद मैं तुम्हारे फेवर में रिजाइन कर दूंगा।

रूपेश : दो साल बाद ! (हँसकर) अरे नहीं डॉक्टर, आदमी की जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं। कल को कौन जानता है ? कल को किसने देखा है ? मैं आज पर यकीन करता हूँ—जो वर्तमान में है, वही कर्म है, जिन्दगी है। कल तो महज एक सपना है। इसलिए मैं जो कुछ भी सोचता हूँ कर गुजरता हूँ। फैसला बदलना मेरा स्वभाव नहीं है।

ध्रुव : (आवेश में खड़े होते हुए) देन दैट्स ओवर—लेट अस फेस द कमेटी—पर इतना याद रखना, मेरे जीते-जी तुम कभी डीन नहीं बन सकोगे।

कहकर आवेश में तेजी से बाहर निकल जाता है। रूपेश के होंठों पर मजाक उड़ाने जैसी मुस्कान छायी रहती है। क्षणिक अन्धकार के बाद पुनः प्रकाश। कुर्सी पर बैठे

चाचा अखबार पढ़ रहे हैं। वन्दना कप में चाय ढाल रही है।

चाचा : लगता है, अभी अपने डॉक्टर का सवेरा नहीं हुआ ! जा बेटी जगा दे।

वंदना : सोने दीजिये चाचा जी, आज तो इतवार है।

चाचा : इतवार हो या सोमवार—अपने को कोई फर्क नहीं पड़ता बेटी। अपने को तो सिर्फ इस बात से मतलब है कि डॉ० ध्रुव से उसकी क्या बात हुयी। मतलब हल हुआ या नहीं ? रेत से तेल निकला हो तो कल वाला हार, जो उनके भाँजे को यरोड्रोम पर पहनाकर वापस ले आया था, आज अपने डीन के गले में डाल दूं। और···

कालबेल की आवाज। चाचा की बात अधूरी रह जाती है। प्याला बढ़ाकर वन्दना दरवाजे की ओर चली जाती है।

चाचा : कौन है बेटी ? यह सबेरे-सवेरे कौन आया है ?

इन्सपेक्टर सोहन के साथ वन्दना वापस लौटती है।

सोहन : एक्सक्यूज मी—मैं डॉ० मेहता से मिलना चाहता हूँ। मेरा नाम सोहन है।

चाचा : लेकिन वो तो अभी—आप देखिये···

इसी समय स्लीपिंग गाउन पहने रूपेश सीढ़ियां उतरता दिखाई देता है और इन्सपेक्टर को देखते ही चौंक उठता है।

सोहन : गुडमार्निंग डॉक्टर मेहता—माईसेल्फ इन्सपेक्टर सोहन, फ्राम पुलिस हेडक्वार्टर।

रूपेश : मार्निंग इन्सपेक्टर। प्लीज सिट डाउन—नाऊ हाऊ कैन आई हेल्प यू ?

सोहन : सॉरी टु डिस्टर्ब यू डॉक्टर—क्या डॉक्टर ध्रुव कल रात यहाँ आये थे ?

रूपेश : हाँ—क्यों ?

सोहन : फार योर इन्फार्मेशन—ही इज डेड नाऊ···

रूपेश : (जैसे अचानक साँप दिख गया हो, चौंक पड़ता है) इट्स इम्पॉसिबुल इन्सपेक्टर—यह कैसे हो सकता है? कल तक तो…

सोहन : लेकिन डॉक्टर यह हो गया है। —डॉक्टर ध्रुव इज डेड —ऐण्ड यू आर नाऊ अण्डर अरेस्ट !

रूपेश : ह्वाट ?

सोहन : यस डॉक्टर मेहता। बयान के मुताबिक डॉ० ध्रुव का मर्डर किया गया है और मुजरिम आप हैं।

रूपेश : लेकिन…लेकिन…यह कैसे…नहीं-नहीं, यह गलत है !

सोहन : सॉरी डॉक्टर मेहता। आपको जो कुछ कहना है, अदालत में कहियेगा। मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ कि बयान के मुताबिक डॉक्टर ध्रुव जब वापस लौट रहे थे, उन्हें चक्कर आने लगे और बेहोश हो गये। बेहोशी के आलम में गाड़ी बेकाबू हो गयी और ऐक्सीडेन्ट हो गया। फौरन उन्हें हास्पिटल पहुँचाया गया जहाँ कुछ समय बाद उनकी मौत हो गई। इस बीच कुछ देर के लिये होश आया, तभी उन्होंने अपना बयान पुलिस को दिया—

रूपेश : लेकिन इस ऐक्सीडेन्ट का मुझसे क्या सम्बन्ध ?

सोहन : डॉक्टर मेहता, यह तो अदालत तय करेगी। मैं अपनी ड्यूटी कर रहा हूँ और उम्मीद है आप सहयोग करेंगे।

रूपेश : ऑलराइट इन्सपेक्टर मैं तैयार हूँ चलिये।

मुड़कर बबना और चाचा की ओर एक बार देखता है। फिर झटके से इन्सपेक्टर के साथ बाहर निकल जाता है।

अन्धकार

(अगले अंक में जारी)

डॉ० अज्ञात तथा कानपुर के अन्य पुरस्कृत साहित्यकारों का अभिनन्दन

रोटरी क्लब, कानपुर ईस्ट की यूनियन क्लब में हुई ५१ वीं बैठक में 'रंगभारती' के सम्पादक डॉ० अज्ञात तथा उ० प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा पुरस्कृत अन्य साहित्यकारों का अभिनन्दन किया गया।

डॉ० आत्मानंद मिश्र को शिक्षा-शास्त्र के क्षेत्र में उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिये रु० ५०००/-, डॉ० अज्ञात को उनके ग्रंथ 'भारतीय रंगमंच का विवेचनात्मक इतिहास' पर रु० २५००/-, डॉ० राष्ट्रबंधु को 'देश-प्रेम के गीत' पर रु० २५००/-' तथा श्री चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक' को 'बन्दर की दुलहिन' पर रु० १०००/- का पुरस्कार इस वर्ष प्रदान किया गया है।

सर्वप्रथम सचिव रोटे० दिनेश अवस्थी ने सभी साहित्यकारों का परिचय दिया। अध्यक्ष रोटे० भगवती प्रसाद गुप्त ने उन्हें माल्यार्पण कर नारियल और तश्तरी उपहार-स्वरूप देकर उनको क्लब की ओर से सम्मानित किया।

इस अवसर पर डॉ० अज्ञात ने अपनी खोज पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिन्दी उन्नीसवीं शताब्दी से ही बंगला और मराठी रंगमंच पर स्वीकृत भाषा के रूप में सम्मान पाती रही है। सन १८२३ में प्रस्तुत बंगला के प्रथम यात्रा-नाटक 'विद्या सुन्दर' के अंत में 'भिश्तिर पाला' नामक हिन्दी प्रहसन तथा विष्णु दास भावे की सांगलीकर नाटक मंडली द्वारा सन् १८५३ में ही 'सीय स्वयंवर' बम्बई के ग्रांट रोड थियेटर में हिन्दी में प्रस्तुत किया गया। एक मराठी नाटक मंडली ने ही सर्वप्रथम 'पुत्रकामेष्टियज्ञ' नामक हिन्दी नाटक आंध्र प्रदेश में खेल कर तेलुगु रंगमंच के आविर्भाव का मार्ग प्रशस्त किया। गुजराती की नाटक मंडलियाँ भी समय-समय पर हिन्दी में नाटक खेलती रही हैं। इस प्रकार बंगला, मराठी तथा गुजराती के नाटकों और रंगमंचों को हिन्दी का महत्त्वपूर्ण प्रदेय रहा है।

डॉ० आत्मानन्द मिश्र ने अपने डी० लिट्० के शोध-ग्रंथ 'भारत में शिक्षा की वित्त व्यवस्था' को अपने विषय पर प्रथम बताते हुए कहा कि उनका यह कार्य विदेशों में भी चर्चित रहा है। उन्होंने अपनी शोध-यात्रा के कुछ मनोरंजक संस्मरण सुनाये।

डॉ० राष्ट्रबंधु ने बाल-साहित्य की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान छात्र-आक्रोश और जन-आंदोलनों के मूल में बालकों के प्रति बरती गई अवहेलना ही रही है।

श्री 'मयंक' ने बाल-साहित्य रचना की दुरूहता की चर्चा करते हुए कहा कि वे उसी बाल-साहित्य को स्वीकार्य मानते हैं, जो बच्चों को नयी प्रेरणा दे।

अंत में रोटे० रामप्रसाद त्रिपाठी ने धन्यवाद देते हुए कहा कि इन साहित्यकारों ने सम्मान प्राप्त करके महानगर का गौरव बढ़ाया है। —रंगदूत

भूल सुधार

इस अंक के पृष्ठ ६ से २० तक भूल से फोलियो में मार्च, १९८१ मुद्रित हो गया है, पाठक कृपया अप्रैल, १९८१ ही पढ़ें।

—सम्पादक

रंगभारती

द्वारा आयोजित

क़ौमी एकता नाट्य-लेखन प्रतियोगिता

में

युवा नाटककारों से क़ौमी एकता
पर आधारित
नाट्य-रचनाएं आमन्त्रित हैं

सर्वश्रेष्ठ कृति पर 501-00 रुपए
का
माधव शुक्ल पुरस्कार

विस्तृत जानकारी के लिए चौथे कवर पर देखें

रंगभारती डाक पंजीकृत संख्या : I.W/NP-95
भारत सरकार के न्यूजपेपर रजिस्ट्रार की रजिस्ट्री संख्या R.N. 25142/73

अखिल भारतीय हिन्दी लेखन प्रतियोगिता 1981-82

सर्वश्रेष्ठ नाटक पर 5,000 रुपये का पुरस्कार

उपरोक्त प्रतियोगिता में प्रविष्टि का मौलिक, अप्रकाशित एवं अमंचित होना आवश्यक है। प्रतियोगिता के निःशुल्क नियम व्यक्तिगत रूप से या डाक द्वारा साहित्य कला परिषद्, 4/6 बी, आसफअली रोड, नई दिल्ली-110002 से किसी भी कार्य दिवस पर प्राप्त किये जा सकते हैं।

प्रविष्टि प्राप्त करने की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर, 1981 है।

दयाप्रकाश सिन्हा
सचिव
साहित्य कला परिषद्, दिल्ली
दूरभाष : 27 82 77

महासचिव, नवम अन्तर्राष्ट्रीय, चौक, लखनऊ-226008 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
मुद्रक। विद्या-मन्दिर प्रेस, रानीकटरा, लखनऊ—फोन 82663।